बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय 3

पुराने नियम में ऐतिहासिक विकास

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1
दिशा-निर्धारण....2
ऐतिहासिक....2
विपरीतता....2
परस्पर निर्भरता....3
विकास....3
ईश्वरीय उद्देश्य....4
ईश्वरीय विधान....4
उदाहरण....5
युग-संबंधी विकास....7
विविध महत्व....8
सार्वभौमिक वाचाएँ....8
राष्ट्रीय वाचाएँ....9
नई वाचा....10
संगठित एकता....11
राज्य का प्रशासन....12
चिरस्थाई अधिकार....12
विस्तृत प्रयोग....13
विषय-संबंधी विकास....14
पारंपरिक विषय....15
प्रतीक विज्ञान....16
परिभाषा....17
विशेषताएँ....18
पहचान....22
उपसंहार....25

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय तीन

पुराने नियम में ऐतिहासिक विकास

परिचय

मेरे देश में एक खेल है जिसका नाम है, “यह बच्चा कौन है?” उस आयोजन का मेजबान अपने वयस्क अतिथियों की सालों पुरानी तस्वीरों को लोगों में वितरित करता है जब वे बच्चे ही थे और प्रत्येक व्यक्ति अनुमान लगाता है कि कौनसी तस्वीर किस व्यक्ति की है। सामान्यतः, कुछ तस्वीरों का मिलान कुछ अतिथियों के साथ हो सकता है। कोई भी वयस्क व्यक्ति ठीक वैसा दिखाई नहीं देता है जैसा वह अपने बचपन में था, परंतु अक्सर चेहरे के कुछ हाव-भाव—हमारी आँखों का आकार, एक चमकती हुई मुस्कुराहट—काफी हद तक वैसे ही रहते हैं जिससे हम बता सकते हैं कि कौन सा बच्चा किस व्यस्क के रूप में बड़ा हुआ है।

पुराने नियम के धर्मविज्ञान के साथ भी कुछ ऐसा ही पाया जाता है। पुराना नियम उन हजारों वर्षों के समय के दौरान का है जिसमें इसका धर्मविज्ञान काफी बदला है। अंत के समय की और अधिक परिपक्व अवस्थाओं में इसका धर्मविज्ञान इसकी आरंभिक, शुरूआती अवस्थाओं के समान नहीं है। परंतु जब हम और अधिक ध्यान से देखते हैं, तो हम देख सकते हैं कि पुराना नियम वास्तव में उसी विश्वास को प्रस्तुत करता है जो समय के साथ-साथ बढ़ा है।

यह बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का निर्माण करना की हमारी श्रृंखला का तीसरा अध्याय है। हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है, “पुराने नियम में ऐतिहासिक विकास।” इस अध्याय में हम यह देखेंगे कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि किस प्रकार पुराने नियम का धर्मविज्ञान समय के गुजरने के साथ-साथ विकसित हुआ।

हमारे पिछले अध्याय में, हमने देखा था कि मसीहियों ने पवित्रशास्त्र को समझने के लिए तीन मुख्य रणनीतियों का प्रयोग किया है : साहित्यिक विश्लेषण, अर्थात् बाइबल को एक साहित्यिक चित्रण के रूप में देखना जिसकी रचना कुछ दृष्टिकोणों को दर्शाने के लिए की गई है; विषयात्मक विश्लेषण, अर्थात् पवित्रशास्त्र को एक दर्पण के रूप में देखना जो हमारे समकालिक या पारंपरिक विषयों या प्रश्नों को प्रतिबिंबित करता है; और ऐतिहासिक विश्लेषण, बाइबल को उन ऐतिहासिक घटनाओं की खिड़की के रूप में देखना जिनकी यह जानकारी देती है। हमने यह भी देखा कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान प्राथमिक रूप से पवित्रशास्त्र के ऐतिहासिक विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करता है, यह विशेष रूप से उन तरीकों को देखता है जिनमें परमेश्वर बाइबल में बताई गईं ऐतिहासिक घटनाओं में सम्मिलित था। इसी कारण, हमने बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के अध्ययन संकाय को इस प्रकार परिभाषित किया :

> बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र में उल्लिखित परमेश्वर के कार्यों के ऐतिहासिक विश्लेषण से लिया गया धर्मवैज्ञानिक चिंतन है।

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान इतिहास में परमेश्वर की सहभागिता के पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले विवरणों पर ध्यान केंद्रित करता है और इन घटनाओं से मसीही धर्मविज्ञान के लिए निष्कर्षों को निकालता है।

पिछले अध्याय में हमने देखा कि कैसे बाइबल के धर्मविज्ञानी इतिहास की अवधियों को समय की समकालिक इकाइयों के रूप में देखने के द्वारा और उन अवधियों के दौरान ईश्वरीय कार्य और वचन प्रकाशनों के परस्पर संबंधों से निकली धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को पहचानने के द्वारा पुराने नियम के धर्मविज्ञान के “समकालिक संश्लेषण” की रचना करते हैं। इस अध्याय में हम अपने ध्यान को उस मुख्य विषय की ओर लगा रहे हैं जिस पर बाइबल के धर्मविज्ञानी पुराने नियम के आधार पर ध्यान देते हैं : वह

है, “ऐतिहासिक विकास,” अर्थात् वे तरीके जिनमें धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ समय के गुजरने के साथ-साथ बढ़ीं या विकसित हुईं।

इस विषय की खोज करने के लिए, हम तीन मुख्य विषयों को स्पर्श करेंगे। पहला, हम ऐतिहासिक विकास के प्रति एक मूलभूत दिशा-निर्धारण को प्राप्त करेंगे। दूसरा, हम यह खोज करेंगे कि कैसे मुख्य ऐतिहासिक अवधियों या युगों के बीच युग-संबंधी विकास हुए। और तीसरा, हम देखेंगे कि पुराने नियम में समय के व्यतीत होने के साथ-साथ विशेष विषय कैसे विकसित हुए। आइए ऐतिहासिक विकास के प्रति मूल दिशा-निर्धारण से आरंभ करें।

दिशा-निर्धारण

ऐतिहासिक विकास के विचार का परिचय देने का एक सर्वोत्तम तरीका इस बात पर ध्यान देना है कि इनमें से प्रत्येक शब्द से हमारा क्या अर्थ है। हम सबसे पहले शब्द “ऐतिहासिक” को देखेंगे। दूसरा, हम ध्यान देंगे कि “विकास” से हमारा क्या अर्थ है। और फिर तीसरा, हम पुराने नियम के ऐतिहासिक विकास का मूल्यांकन करने के बाइबल के उदाहरण को देखेंगे। आइए पहले “ऐतिहासिक” शब्द को देखें।

ऐतिहासिक

शब्द “ऐतिहासिक” अंग्रेजी के शब्द “डियाक्रोनिक” का अनुवाद है जो यूनानी भाषा के दो शब्दों से निकला है : पहला है पूर्वसर्ग डिया जिसका अर्थ अक्सर “के द्वारा” या “शुरू से अंत तक” होता है; और दूसरा, यूनानी संज्ञा क्रोनोस है जिसका अर्थ “समय” से है। डियाक्रोनी या इतिहास समय के बीतने से संबंध रखता है। बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के संदर्भ में शब्द “डियाक्रोनिक” (ऐतिहासिक) उन तरीकों की ओर संकेत करता है जिनमें पुराने नियम का धर्मविज्ञान परिवर्तित हुआ, बदला, या समय के साथ-साथ विकसित हुआ।

यह देखना सहायक होगा कि पुराने नियम के ऐतिहासिक दृष्टिकोण समकालिक संश्लेषण, हमारे पिछले अध्याय के विषय, से संबंध रखते हैं। एक ओर, हम यह देखेंगे कि कैसे यह समकालिक संश्लेषण के विपरीत खड़ा होता है। और दूसरी ओर, हम ऐतिहासिक और समकालिक दृष्टिकोणों के बीच परस्पर संबंध को देखेंगे। आइए पहले हम यह देखें कि वे कैसे एक दूसरे के विपरीत हैं।

विपरीतता

आपको स्मरण होगा कि हमने पुराने नियम के समकालिक संश्लेषण की तुलना फिल्म के विशेष दृश्यों पर ध्यान देने के साथ की थी, जिसमें हमने एक-एक करके फिल्म के तार्किक भागों को देखा था। समकालिक संश्लेषण उन धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं पर ध्यान देता है जो बाइबल के इतिहास की चुनी हुए अवधियों से निकली हैं। परमेश्वर ने इस या उस समय से क्या प्रकट किया? इसके विपरीत, पुराने नियम की ऐतिहासिकता पर ध्यान देना मानो एक फिल्म की कहानी पर ध्यान देना है, जब वह एक से दूसरे दृश्य की ओर आगे बढ़ती है। यह उन तरीकों पर ध्यान केंद्रित करना है, जिनमें एक फिल्म आगे बढ़ती हुई आरंभ से लेकर अंत तक अपने नाटय को प्रकट करती है। बाइबल के ऐतिहासिक दृष्टिकोण इस बात पर ध्यान देते हैं कि कैसे धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ समय के साथ-साथ विकसित होते हुए प्रकट हुईं। जैसे-जैसे इतिहास आगे बढ़ा तो परमेश्वर के प्रकाशन कैसे विकसित हुए?

निर्गमन 1:1-19:1 में मिस्र से इस्राएल के छुटकारे की अपेक्षाकृत छोटी अवधि पर ध्यान दें। इस अवधि का एक समकालिक दृष्टिकोण कुछ ऐसे प्रश्न पूछेगा : "इस संपूर्ण अवधि के दौरान परमेश्वर ने क्या किया और कहा?" "इस संपूर्ण समय के दौरान किस प्रकार की धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ स्थापित हुई थीं?" परंतु एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण का ध्यान उन परिवर्तनों की ओर अधिक होता है जो धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं में हुए हैं। यह ऐसे प्रश्न पूछता है : "इस समय के दौरान जब परमेश्वर ने विभिन्न तरीकों से कार्य किया और बात की तो धर्मविज्ञान में कौन से परिवर्तन हुए?" "मूसा की आरंभिक बाल्यावस्था से लेकर जलती हुई झाड़ी में उसकी बुलाहट तक कौनसे धर्मवैज्ञानिक विकास हुए?" "जलती हुई झाड़ी में परमेश्वर के प्रकाशन ने मिस्र में उसके कार्य को कैसे निर्धारित किया?" पुराने नियम के इस भाग के प्रति ऐतिहासिक दृष्टिकोणों में ये और इन जैसे कई अन्य विषय मुख्य रूप से महत्वपूर्ण बन जाते हैं।

परस्पर निर्भरता

अब चाहे ऐतिहासिक और समकालिक दृष्टिकोण एक दूसरे से कितने भी भिन्न हों, फिर भी परस्पर एक दूसरे पर अत्याधिक निर्भर हैं। वास्तव में, दूसरे के बिना किसी एक दृष्टिकोण का अनुसरण बहुत दूर तक करना संभव नहीं है। इसी कारण, जब बाइबल के धर्मविज्ञानी पवित्रशास्त्र का प्रयोग करते हैं, तो वे विभिन्न रूपों में समकालिक और ऐतिहासिक कार्य को काम में लाते रहते हैं।

इस बात पर ध्यान दीजिए कि कैसे हमें समकालिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोणों का बारी-बारी से प्रयोग करना चाहिए जब हमारा दृष्टिकोण समय की छोटी से बड़ी अवधियों की ओर बढ़ता है। शुरुआत के लिए, कुछ ऐतिहासिक विश्लेषण बहुत ही छोटे समकालिक संश्लेषण से पहले आते हैं। हमें ऐतिहासिक रूप से धर्मवैज्ञानिक परिवर्तनों को समझना जरुरी है ताकि हम उसे सारगर्भित करने के तरीके का पता लगा सकें जो समय की एक विशेष अवधि में घटित हुआ था।

अब, जब हम समय की लंबी अवधियों पर ध्यान देते हैं, तो हमारा ऐतिहासिक विश्लेषण समकालिक संश्लेषण पर निर्भर होता है। पहले हम बहुत सी छोटी अवधियों के समकालिक संश्लेषणों की रचना करते हैं, और तब हम यह पता लगाते हैं कि कैसे धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ उन छोटी अवधियों के दौरान बदलती हैं। जब हम एक बार समय की इस लंबी अवधि को ऐतिहासिक रूप से समझ लेते हैं, तो हम इसे संपूर्ण रूप से संश्लेषित कर सकते हैं। इस प्रकार की प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक हम बाइबल आधारित प्रकाशन की संपूर्णता तक नहीं पहुँच जाते।

चाहे समकालिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण कितने भी भिन्न क्यों न हों, हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि किसी भी एक रणनीति का अनुसरण किसी न किसी मात्रा में दूसरी रणनीति पर निर्भरता के बिना नहीं किया जा सकता। ऐसा नहीं है कि एक दृष्टिकोण दूसरे दृष्टिकोण से अधिक महत्वपूर्ण या आधारभूत है। समकालिक और ऐतिहासिक दोनों दृष्टिकोण आवश्यक हैं यदि हम पुराने नियम के धर्मविज्ञान को सही रूप में समझना चाहते है।

अब जबकि हम पुराने नियम के ऐतिहासिक दृष्टिकोण के मूलभूत विचार को समझ गए हैं, इसलिए हमें यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि ऐतिहासिक विकास से हमारा क्या अर्थ है।

विकास

हम दो मुख्य विचारों का सुझाव देने के लिए ऐतिहासिक परिवर्तनों के बारे में बोलने की अपेक्षा शब्द "विकास" का प्रयोग करते हैं। पहला, पुराने नियम की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं में परिवर्तन सदैव इतिहास के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने की ओर बढ़ते हैं। और दूसरा, हम विकास के बारे में इसलिए बोलते हैं क्योंकि धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन केवल इतिहास में परमेश्वर की विधान-संबंधी सहभागिता

के द्वारा ही घटित होते हैं। सबसे पहले पुराने नियम के धर्मविज्ञान के प्रत्येक परिवर्तन के पीछे ईश्वरीय उद्देश्यों पर ध्यान दें।

ईश्वरीय उद्देश्य

एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक, पवित्रशास्त्र पुष्टि करता है कि धर्मविज्ञान के बदलावों सहित परमेश्वर की सृष्टि के लिए इतिहास की प्रत्येक बात सदैव परमेश्वर के अटल उद्देश्यों को पूरा करती है। यशायाह 46:10 पूरे पुराने नियम के एक सामान्य दृष्टिकोण को दर्शाता है। वहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> मै तो अन्त की बात आदि से, और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा। (यशायाह 46:10)

यह और कई अन्य अनुच्छेद पुराने नियम के सामान्य दृष्टिकोण को प्रकट करते हैं कि इतिहास सदैव अपने मार्ग का अनुसरण करता है, और उन लक्ष्यों तक पहुँचता है जिन्हें परमेश्वर ने इसके लिए नियुक्त किया है। इतिहास के लिए परमेश्वर के लक्ष्य न केवल एक विस्तृत, दीर्घकालिक लक्ष्य हैं, बल्कि विशेष, अल्पकालिक लक्ष्य भी हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर के पास दाऊद को इस्राएल का राजा बनाने के पीछे विशिष्ट अल्पकालिक कारण थे; वह एक स्थाई राजवंश और एक राजधानी की स्थापना करने के द्वारा इस्राएल की प्रजा को एकता में लाना चाहता था। प्रत्येक सामयिक-सरंचना के दौरान धर्मवैज्ञानिक विकास हुए जिन्होंने परमेश्वर के अल्पकालिक उद्देश्यों को पूरा किया।

परंतु जैसा कि हमने इस पूरी श्रृंखला में देखा है, परमेश्वर के पास इतिहास के लिए एक व्यापक राज्य-संबंधी उद्देश्य भी है। आरंभ से ही, उसकी शैली अपने स्वरूप के कार्यों के माध्यम से संपूर्ण पृथ्वी पर अपने स्वर्गीय राज्य को पहुँचाने के द्वारा स्वयं को महिमा देने की रही है और यह योजना परमेश्वर के सारे उद्देश्यों को एकता में बाँधती है। उदाहरण के लिए, यद्यपि इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजना में दाऊद के राजत्व के तात्कालिक उद्देश्य थे, परंतु फिर भी यह परमेश्वर के राज्य को इस पृथ्वी की अंतिम छोर तक पहुँचाने के बड़े लक्ष्य की ओर एक कदम था। दाऊद के राजवंश के स्थाईत्व ने मसीह, अर्थात् दाऊद के सिद्ध विश्वासयोग्य पुत्र, के आगमन के मंच को तैयार किया, जो पिता की महिमामयी उपस्थिति के लिए पृथ्वी को तैयार करेगा। परमेश्वर ने एक बड़े गंतव्य को ध्यान में रखते हुए इतिहास को आरंभ किया और इतिहास की प्रत्येक घटना, बिना असफल हुए, इस महिमामयी अंत तक पहुँचेगी।

पुराने नियम की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं में परिवर्तन बिखरे हुए या अर्थहीन नहीं थे। वे उद्देश्यपूर्ण थे। वे बिना असफल हुए परमेश्वर के अल्पकालिक लक्ष्यों, और साथ ही साथ उसकी राज्य-संबंधी योजना की पूर्णता को लेकर आए। यह जानते हुए कि पुराने नियम के धर्मवैज्ञानिक परिवर्तनों ने इतिहास को अपरिवर्तनीय रूप में परमेश्वर के लक्ष्यों की ओर अग्रसर किया, हमें इसके साथ यह भी जोड़ना चाहिए कि ये विकास इतिहास में परमेश्वर की विधान-संबंधी सहभागिता के संबंध में घटित हुए।

ईश्वरीय विधान

जब हम विवरणों पर ध्यान नहीं देते, तो पुराने नियम के धर्मवैज्ञानिक विकासक्रम अक्सर दूर से एक सड़क के समान दिखाई देते है। जब हम विवरणों से बहुत दूर रहते हैं, तब धर्मवैज्ञानिक परिवर्तनों की सड़क सीधी और सपाट दिखाई देती है। परंतु जब हम निकट से देखते हैं, तो हम देख सकते हैं कि पुराने नियम की सड़क वास्तव में तेज़ ढलानों, तेज उतारों, और दाएँ और बाएँ के घुमावदार मोड़ों से भरी हुई है। अचानक से आए ये मोड़ परमेश्वर के विधान, अर्थात् अपनी सृष्टि के साथ उसकी जटिल सहभागिता के कारण आते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बिना किसी संदेह के, कुछ ईश्वरीय प्रकाशन ऐसे रूपों में ऐतिहासिक परिस्थितियों के साथ संबंधित होते हैं जिनकी हम अपेक्षा करते हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने मूसा को उठा कर चलने वाले मिलाप के तम्बू को बनाने की आज्ञा दी क्योंकि इस्राएलियों को तब भी उसकी आराधना करना आवश्यक था जब वे प्रतिज्ञा की भूमि की ओर जा रहे थे। इसके साथ-साथ, पुराने नियम में घटित कुछ धर्मवैज्ञानिक विकासक्रम अक्सर बिखरे हुए या अस्पष्ट रूप में दिखाई देते हैं। एकमात्र स्पष्टीकरण जिसे हम निश्चितता के साथ थामे रह सकते हैं वह यह कि परमेश्वर चाहता था कि ये धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन घटित हों।

उदाहरण के लिए परमेश्वर द्वारा पुराने नियम में इस्राएल से चाही गईं धार्मिक रस्मों पर ध्यान दें। परमेश्वर ने अपने लोगों को पवित्र प्रजा बनाने के लिए कई रस्मों को करने की आज्ञा दी थी। आश्चर्य की बात यह है कि रस्म-संबंधी व्यवस्थाओं के कुछ पहलू इसलिए पवित्रता के चिह्नों के रूप में प्रकट होते हैं क्योंकि वे इस्राएल के चारों ओर की कनानी संस्कृति सहित अन्य संस्कृतियों के विपरीत खड़े होते हैं। परंतु पवित्रता के अन्य चिह्न कनानियों सहित अन्य संस्कृतियों के कार्यों के समान ही थे। वास्तव में, कई बार परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपने पड़ोसियों से अलग बनने के लिए कहा, और अन्य समयों में उसने उन्हें वैसे ही कार्य करने के लिए कहा जैसे उनके पड़ोसी करते थे। परमेश्वर के प्रकाशन ने ऐसा क्यों किया? उसके प्रकाशन की इन भिन्नताओं का क्या कारण था? यद्यपि हम अपनी समझ में कुछ प्रगति कर सकते हैं, परंतु अंततः हम नहीं जानते कि ऐसा क्यों है। एकमात्र बात जिसे हम निश्चितता से जानते हैं वह यह कि परमेश्वर ने निर्धारित किया कि उसका प्रकाशन इन्हीं रूपों में विकसित हो।

एक तीसरे प्रकार का धर्मवैज्ञानिक विकास तब सामने आया, जब परमेश्वर ने उन चुनावों का प्रत्युत्तर दिया जो मनुष्यों और अन्य स्वैच्छिक प्राणियों ने किए। उदाहरण के लिए, इस्राएलियों का इतिहास मनुष्य की असफलता से छलनी किया हुआ है जिसने परमेश्वर को ऐसे तरीकों में प्रकट किया जो विशेष धर्मवैज्ञानिक विकास को लेकर आए। कुछ को यदि हम दर्शाएँ तो वे ये हैं : परमेश्वर ने निर्गमन की पहली पीढ़ी को प्रतिज्ञा की भूमि का अधिकार देने का प्रस्ताव दिया, परंतु उनकी अविश्वासयोग्यता उन्हें उनके तिरस्कार की ओर ले गई। परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं ने इस्राएल को पश्चाताप करने और उसके दंड से बचने का अवसर प्रदान किया, परंतु इस्राएल के निरंतर विद्रोह ने परमेश्वर को प्रेरित किया कि वह उन्हें बंधुआई में भेजे। निस्संदेह, इनमें से कोई भी मानवीय परिवर्तन परमेश्वर के सर्वोच्च नियंत्रण से बाहर नहीं थे। फिर भी, मनुष्य के दृष्टिकोण से, पवित्रशास्त्र में बहुत बार कई धर्मवैज्ञानिक विकास उन चुनावों पर आधारित थे जिन्हें मनुष्य और अन्य स्वैच्छिक प्राणियों ने किए थे।

जबकि पुराने नियम के धर्मविज्ञान में हुए परिवर्तनों को विकास के रूप में दर्शाते हुए कहना सही है, क्योंकि वे परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करते हैं, फिर भी हमें ध्यान में रखना चाहिए कि यह विकास कितना जटिल था। परमेश्वर ने स्वयं को अपने कार्यों और शब्दों के द्वारा कई विभिन्न तरीकों से प्रकट किया। और इसी कारण, पुराने नियम के धर्मविज्ञान के विकास भी कई विभिन्न तरीकों से घटित हुए।

इस समय, हमें बाइबल के लेखकों या पात्रों के बाइबल आधारित उदाहरण की ओर मुड़ना चाहिए जो पवित्रशास्त्र के साथ ऐतिहासिक रूप से व्यवहार करते हैं। हमारे उद्देश्यों के लिए, हम केवल एक उदाहरण को देखेंगे जो ऐतिहासिक विकास के साथ हमारे संबंध को स्पष्ट करेगा और वैध ठहराएगा।

उदाहरण

मत्ती 19:3 में कुछ फरीसियों ने इस प्रश्न के साथ यीशु की परीक्षा की :

> तब फरीसी उसकी परीक्षा करने के लिए पास आकर कहने लगे, "क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है?" **(मत्ती 19:3)**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यहाँ पर उठाया गया प्रश्न यीशु के दिनों की रब्बीवादी विचारधाराओं के बीच वाद-विवाद का प्रश्न था। और उनके मतभेद व्यवस्थाविवरण में दी गई मूसा की शिक्षाओं पर आधारित थे। सुनिए मूसा ने व्यवस्थाविवरण 24:1 में क्या लिखा है :

> यदि कोई पुरुष किसी स्त्री से विवाह कर ले, और उसके बाद उसमें कुछ लज्जा की बात पाकर उससे अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर से निकाल दे। **(व्यवस्थाविवरण 24:1)**

यीशु के दिनों में, "लज्जा की कुछ बात" वाक्यांश के अर्थ पर वाद-विवाद था। कुछ रब्बियों का मानना था कि इस अभिव्यक्ति का अर्थ यह था कि तलाक या त्यागपत्र लगभग उस प्रत्येक बात के लिए वैध था जिससे पति अप्रसन्न हो जाता था, परंतु अन्य रब्बियों ने शब्द की व्याख्या केवल लैंगिक अनैतिकता के रूप में की थी। सुनिए किस प्रकार यीशु ने पहले पहल मत्ती 19:4-6 में फरीसियों को प्रत्युत्तर दिया :

> "क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि . . . उसने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा, इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे? अतः वे अब दो नहीं, परंतु एक तन हैं। इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।" **(मत्ती 19:4-6)**

फरीसियों के प्रश्न का उत्तर देने के लिए यीशु ने उत्पत्ति के पहले अध्यायों पर आधारित विवाह का एक संक्षिप्त समकालिक सारांश प्रदान किया।

ध्यान दें कि यीशु ने "आरंभ से" सृष्टि के पाप द्वारा भ्रष्ट किए जाने से पहले महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं की कुछ ख़ास विशेषताओं की ओर ध्यान आकर्षित किया। उत्पत्ति 1:27 को दर्शाते हुए उसने ध्यान दिया कि परमेश्वर ने "नर और नारी" करके मनुष्यजाति की रचना की। उत्पत्ति 2:24 से उद्धृत करते हुए, यीशु ने कहा कि "इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे।" यीशु ने फिर यह निष्कर्ष निकाला, "इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।" विवाह से संबंधित सृष्टि का आरंभिक आदेश यह था कि एक पुरूष और एक स्त्री जो आपस में विवाह कर लेते हैं वे एक तन हो जाते हैं।

सृष्टि के समय जब यीशु ने विवाह के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण का वर्णन किया, तो फरीसियों ने स्पष्ट रूप से उससे व्यवस्थाविवरण 24 के बारे में पूछा। सुनिए मत्ती 19:7 में उन्होंने क्या कहा :

> "फिर मूसा ने यह क्यों ठहराया कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे?" **(मत्ती 19:7)**

पहली सदी की मान्यताओं के सांमजस्य में यीशु और फरीसी जानते थे कि विवाह के विषय में मूसा की शिक्षाएँ उस धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं के साथ सामजंस्यता में थीं, जिन्हें परमेश्वर ने आरंभ में नियुक्त किया था। अतः यीशु कैसे अपनी अभी-अभी कही बात का उसके प्रकाश में बचाव कर सका जो मूसा ने तलाक के विषय में कहा था?

प्रत्युत्तर में, यीशु ने स्पष्ट किया कि एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विकास, एक धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन, सृष्टि के समय और मूसा की अवधि में हुआ था। जैसा कि उसने मत्ती 19:8 में कहा :

> "मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी-अपनी पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी, परंतु आरम्भ से ऐसा नहीं था।" **(मत्ती 19:8)**

यहाँ यीशु ने ध्यान दिया कि जिस समय मूसा ने व्यवस्था दी, तब तक परमेश्वर ने कुछ रूपों में विवाह के धर्मविज्ञान में परिवर्तन करने के द्वारा मनुष्य के पाप के प्रति अपनी प्रतिक्रिया दे दी थी। पवित्रशास्त्र को ऐतिहासिक रूप से देखने पर उसने यह कहते हुए मूसा के समय की तुलना आदम के दिनों से की, "परंतु आरंभ से ऐसा नहीं था," और फिर यह मानते हुए कि मूसा के दिनों में तुम्हारे [इस्राएलियों के] मन कठोर थे।

अतः यीशु ने निष्कर्ष निकाला कि कुछ कारणों के लिए तलाक की अनुमति देने के द्वारा परमेश्वर ने इस मानवीय परिस्थिति का प्रत्युत्तर दिया, यद्यपि यह परमेश्वर का आदर्श नहीं था। व्यवस्थाविवरण 24 की व्यवस्था इस्राएल के मन की कठोरता के प्रत्युत्तर में परमेश्वर का अनुमतिदायक नियम थी।

विवाह और तलाक के प्रति यीशु के ऐतिहासिक मूल्याँकन ने उसकी अगुवाई तलाक के आधार के एक बहुत ही उच्च प्रतिबंधात्मक दृष्टिकोण को रेखांकित करने में की। जैसा कि हम मत्ती 19:9 में पढ़ते हैं :

> और मैं तुम से कहता हूँ, कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है; और जो उस छोड़ी हुई से विवाह करे, वह भी व्यभिचार करता है। (मत्ती 19:9)

अतः हम देखते हैं कि यीशु ने पुराने नियम के धर्मविज्ञान के ऐतिहासिक विकास के प्रकाश में विवाह और तलाक को समझा था। सर्वप्रथम, तलाक अकल्पनीय था। बाद में, जब पाप ने परमेश्वर के लोगों के मनों को कठोर कर दिया था, तब तलाक की अनुमति दी गई थी परंतु इसका समर्थन नहीं किया गया था। इस विषय में, मनुष्य की परिस्थिति में एक परिवर्तन ने पुराने नियम के धर्मविज्ञान में परिवर्तन की ओर अगुवाई की। जिस तरह से यीशु ने पुराने नियम से व्यवहार किया, वह दर्शाता है कि पुराने नियम के धर्मविज्ञान के साथ ऐतिहासिक रूप से व्यवहार करना आज भी हमारे लिए वैध और महत्वपूर्ण है।

अब जबकि हमने पुराने नियम के ऐतिहासिक दृष्टिकोणों के प्रति एक मूलभूत दिशा-निर्धारण को प्राप्त कर लिया है, इसलिए हमें अपने अध्याय के दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए : युग-संबंधी धर्मवैज्ञानिक विकास।

युग-संबंधी विकास

कल्पना कीजिए कि आप अपने एक मित्र को अपने जीवन के पिछले वर्ष के विषय में एक पत्र लिख रहे हैं। शायद एक रणनीति जिसका आप प्रयोग करें वह यह हो कि आपके जीवन में महत्वपूर्ण बातें किस प्रकार ऐसे रूपों में घटित हुईं कि पूरे वर्ष को विभिन्न अवधियों में विभाजित कर दिया। उदाहरण के लिए, आप वर्णन कर सकते हैं कि आपके परिवारिक जीवन, आपके कलीसियाई जीवन, और यहाँ तक कि आपकी आंतरिक आत्मिक दशा में वर्ष के प्रत्येक महीने में किस प्रकार बदलाव आया। आपके पत्र के अनुच्छेद शायद कुछ ऐसे आरंभ हों : "जनवरी में यह हुआ"; "फरवरी में यह सब हुआ," इत्यादि।

लगभग इसी तरह से, बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी अक्सर पुराने नियम के विकास का वर्णन ऐसे रूपों में करते हैं, जिनमें परमेश्वर के प्रकाशन इतिहास की मुख्य अवधियों या युगों को विभाजित करते हैं।

पुराने नियम के धर्मविज्ञान के युग-संबंधी विकास को खोजने के लिए हम दो विषयों को देखेंगे। पहला, हम पुराने नियम के विभिन्न युगों के विविध धर्मवैज्ञानिक महत्वों को देखेंगे। और दूसरा, हम

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

संगठित धर्मवैज्ञानिक एकता की खोज करेंगे। आइए पहले हम उन तरीकों को देखें जिनमें पुराना नियम ऐसे युगों में विभाजित होता है जिनके विशेष धर्मवैज्ञानिक महत्व रहे हों।

विविध महत्व

पुराने नियम के इतिहास को मुख्य धर्मवैज्ञानिक अवधियों में विभाजित करने के बहुत से तरीके हैं। हम भौगोलिक विभाजनों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं; हम पुराने नियम को इसके साहित्यिक विभाजन के आधार पर विभाजित कर सकते हैं। परंतु इस अध्याय में हम इस श्रृंखला के पहले के अध्यायों में उल्लिखित पुराने नियम की एक महत्वपूर्ण विशेषता की ओर लौटते हुए युग-संबंधी विकास को दर्शाएँगे : वह है, ईश्वरीय वाचाओं का प्रभाव।

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा था, पुराना नियम प्रत्येक ईश्वरीय-मानवीय संबंध को तीन वाचाई क्रियाओं के आधार पर दर्शाता है : ईश्वरीय परोपकारिता, परमेश्वर के प्रति मनुष्य की विश्वासयोग्यता की आवश्यकता, और आज्ञाकारिता के लिए आशीषों और अवज्ञाकारिता के लिए श्रापों के परिणाम। ये वाचाई क्रियाएँ पूरे पुराने नियम के इतिहास में निरंतर बनी रहीं। अतः वे ऐसी बहुत सी धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को संगठित करने के लिए उपयोगी हैं जो पुराने नियम के इतिहास में प्रकट होती हैं।

परंतु पुराना नियम इस सामान्य भाव में केवल वाचाई ही नहीं था। ऐसे छह समय थे जब परमेश्वर ने विशेष धर्मवैज्ञानिक महत्वों के साथ मुख्य वाचाओं को स्थापित किया : आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, और दाऊद के साथ बाँधी गई वाचाएँ तथा नई वाचा। इस अध्याय में अपने उद्देश्यों के लिए, प्रत्येक मुख्य वाचा के धर्मवैज्ञानिक महत्वों की एक त्वरित समीक्षा पर्याप्त होगी।

पुराने नियम की छह वाचाएँ तीन मुख्य श्रेणियों में आती हैं। पहली, आदम और नूह के साथ बाँधी गई सार्वभौमिक वाचाएँ। दूसरी, अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ बाँधी गई राष्ट्रीय वाचाएँ। और तीसरी, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पहले से दर्शाई गई नई वाचा। आइए सार्वभौमिक वाचाओं के साथ आरंभ करते हुए इन तीनों समूहों को देखें।

सार्वभौमिक वाचाएँ

हम आदम और नूह के साथ बाँधी गई वाचाओं को “सार्वभौमिक” के रूप में दर्शाते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर और सारी मनुष्यजाति के बीच बाँधी गई थीं। अतः इन वाचाओं की धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ हमें परमेश्वर और उसके लोगों के बीच के संबंध के बारे में बहुत कुछ बताती हैं।

आदम के साथ की वाचा उत्पत्ति के आरंभिक अध्यायों में स्थापित ईश्वरीय-मानवीय संबंधों के प्रशासन को दर्शाती है। यद्यपि, “वाचा” के रूप में आम तौर पर अनूदित इब्रानी शब्द बेरीत उत्पत्ति के पहले तीन अध्यायों में प्रकट नहीं होता, फिर भी हमने अन्य श्रृंखलाओं में देखा है कि आदम के साथ परमेश्वर के संबंधों को वाचा के रूप में या कम से कम वाचा से बहुत ही मिलते जुलते प्रबंध के रूप में समझने के पर्याप्त प्रमाण हैं।

पहले ईश्वरीय वाचाई प्रशासन के रूप में, इस वाचा के धर्मवैज्ञानिक महत्व पूरे पवित्रशास्त्र के लिए इतने आधारभूत थे कि हम इसे “बुनियादी वाचा” कह सकते हैं। आदम के दिनों से लेकर नूह तक प्रकट प्रत्येक विशेष धर्मवैज्ञानिक संरचना आदम की वाचा के महत्वों के द्वारा बहुत अधिक प्रभावित थी। उन सब ने बल दिया कि कैसे परमेश्वर पाप से पहले मनुष्यजाति को अदन में रखने के द्वारा परोपकारी था और कैसे परमेश्वर पाप के बाद बुराई पर अंततः मनुष्यजाति की विजय की प्रतिज्ञा देने के द्वारा दयालु था। आदम और परमेश्वर के संबंध ने इस पर भी बल दिया है कि सभी मनुष्यों की यह जिम्मेदारी है कि वे अपने सृष्टिकर्ता की विश्वासयोग्यता के साथ सेवा करें। यही नहीं, उत्पत्ति के ये अध्याय फलस्वरूप आने

वाली उन आशीषों और श्रापों को भी दर्शाते हैं जो मनुष्यों पर तब आएँगे जब वे परमेश्वर की आज्ञाओं को मानेंगे या उनकी अवज्ञा करेंगे।

दूसरी सार्वभौमिक वाचा परमेश्वर द्वारा नूह के साथ बाँधी गई वाचा है। इस वाचा का उल्लेख उत्पत्ति 6 और 9 में स्पष्ट रीति से किया गया है। नूह की वाचा में परमेश्वर ने पाप के प्रति मनुष्य की प्रवृति पर ध्यान दिया और प्रकृति में स्थिरता को प्रदान करने के द्वारा हमारे प्रति धैर्य रखा। इसी कारण, हम इस वाचा को "स्थिरता की वाचा" कह सकते हैं। जैसा कि परमेश्वर ने उत्पति 8:21-22 में कहा :

> मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूँगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है; तौभी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूँगा। अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरंतर होते चले जाएँगे। (उत्पति 8:21-22)

जैसा कि पद 21 कहता है, परमेश्वर ने इस तथ्य पर ध्यान दिया कि "मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है।" इसलिए मनुष्य की अनवरत पापमयता के प्रत्युत्तर में परमेश्वर ने प्रकृति के लिए नए प्रबंध के सामान्य अनुग्रह को प्रदान करने की एक दीर्घकालिक रणनीति को स्थापित किया ताकि छुटकारा पाई हुई मनुष्यजाति उसके उद्देश्यों को पूरा कर सके। परमेश्वर ने यह एक ऐसे सुरक्षित, पूर्वानुमेय प्राकृतिक क्षेत्र प्रदान करने के द्वारा किया जिसमें हम ठोकर खा सकते है और उसकी सेवा करने के लिए फिर उठ सकते हैं।

नूह की वाचा की सक्रियता के मुख्य ध्यान ने नूह से लेकर अब्राहम तक के प्रत्येक ईश्वरीय प्रकाशन के चरित्र को दर्शाया। इस समय के दौरान का प्रत्येक ईश्वरीय-मानवीय संबंध प्रकृति में दीर्घकालिक स्थिरता के परमेश्वर के परोपकार के द्वारा, परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता की सार्वभौमिक मांग और सभी मनुष्यों के लिए उसके उद्देश्यों के द्वारा, तथा उन विशेष तरीकों के द्वारा गहराई से प्रभावित हुए जिनमें मनुष्यों ने तब आशीषों और श्रापों के परिणामों का सामना किया जब उन्होंने इस पूरी पृथ्वी पर फैलते हुए विभिन्न राष्ट्रों की रचना की।

राष्ट्रीय वाचाएँ

सार्वभौमिक वाचाओं के बाद, परमेश्वर ने अपने विशेष लोगों, अर्थात् इस्राएल के साथ राष्ट्रीय वाचाओं को स्थापित किया : अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ बाँधी गई वाचाएँ। इतिहासके इन चरणों में परमेश्वर ने अपने वाचाई ध्यान को मुख्य रूप से केवल एक प्रजातीय समूह तक सीमित कर दिया, और इस्राएल को एक ऐसे राष्ट्र या जाति के रूप में स्थापित किया जो शेष मनुष्यजाति की अगुवाई परमेश्वर की सेवा में करे।

हम उत्पत्ति 15 और 17 में अब्राहम की वाचा के स्पष्ट उल्लेखों को पाते हैं। अब्राहम के साथ बाँधी गई वाचा ने इस्राएल की संख्यात्मक वृद्धि और प्रतिज्ञा की उस भूमि पर अधिकार करने की प्रतिज्ञाओं पर बल दिया, जहाँ से इस्राएल को परमेश्वर की आशीषों को पूरे संसार में फैलाना था। और इसी कारण अब्राहम की वाचा को "प्रतिज्ञा की वाचा" के रूप में चित्रित किया जा सकता है।

जब कभी हम अब्राहम और मूसा के बीच की समयावधि का अध्ययन करते हैं, तो हम पाते हैं कि अब्राहम के साथ बाँधी गई परमेश्वर की वाचा के महत्व ने पूरी अवधि को चिन्हित किया है। अब्राहम और उसके वंश के प्रति परमेश्वर की विशेष परोपकारिता, कुलपतियों से अपेक्षित उसकी विशेष विश्वासयोग्यता, और इस्राएल के पूर्वजों के लिए आशीषों और श्रापों के उदाहरण बार-बार प्रकट होते हैं।

परमेश्वर ने इस्राएल के साथ दूसरी वाचा मूसा के द्वारा स्थापित की जब वह उन्हें सीनै पहाड़ पर लेकर आया। मूसा के द्वारा इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा का प्राथमिक विवरण निर्गमन 19-24 में

पाया जाता है। ये अध्याय बल देते हैं कि कैसे परमेश्वर ने दस आज्ञाओं और वाचा की पुस्तक देने के द्वारा बारह गोत्रों को एकत्र किया और उन्हें एक राजनैतिक रूप से एकीकृत राष्ट्र के रूप में संगठित किया। इसी कारण, मूसा के साथ बाँधी गई वाचा को "व्यवस्था की वाचा" भी कहा जा सकता है।

मूसा और दाऊद के बीच के समय में प्रकट धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा के महत्व के द्वारा बहुत अधिक प्रभावित थीं। व्यवस्था को इस्राएल के प्रति ईश्वरीय परोपकारिता के रूप में प्रस्तुत किया गया था। व्यवस्था ने उन विशेष तरीकों को दर्शाया जिनमें इस्राएल को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होना था। और आशीषों और श्रापों के विशेष परिणामों को मूसा की व्यवस्था के अनुरूप इस्राएल के आरंभिक राष्ट्रीय इतिहास में प्रदर्शित किया गया।

बाद में, जब इस्राएल दाऊद के शासनकाल में एक पूर्ण साम्राज्य बन गया, तब परमेश्वर ने दाऊद के साथ भी एक वाचा बाँधी। हमें सटीकता से नहीं पता कि कब दाऊद के जीवन में परमेश्वर ने औपचारिक रूप से इस वाचा को स्थापित किया, परंतु 2 शमूएल 7, 1 इतिहास 17, भजन 89 और भजन 132 दाऊद की वाचा की मूल विषय-वस्तु को दर्शाते हैं। दाऊद की वाचा ने इस्राएल में राजत्व पर बल दिया। और अधिक सटीकता से कहें तो, इसने दाऊद की राजशाही के स्थाई बने रहने, यरूशलेम के इस्राएल की राजधानी बने रहने और इसके मंदिर में आराधना के बने रहने की प्रतिज्ञा की। यद्यपि दाऊद के कुछ वंशजों ने तब दुःख उठाया जब वे परमेश्वर से दूर हो गए, फिर भी परमेश्वर द्वारा इस्राएल के साम्राज्य-संबंधी राजवंश के रूप में दाऊद के घराने का चुनाव कभी त्यागा नहीं जाएगा। इसी कारण, हम दाऊद की वाचा को इस्राएल की "राजवंश की वाचा" कह सकते हैं।

दाऊद की राजकीय वाचा की सक्रियता ने दाऊद के समय से लेकर पुराने नियम के अंत तक धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को बड़ी गहराई से प्रभावित किया। विविध रूपों में, परमेश्वर ने दाऊद के घराने को और उस घराने के द्वारा दया के बहुत से कार्यों को दर्शाया। उसने दाऊदवंशी राजाओं और उनके अधीन के राष्ट्रों से विश्वासयोग्यता की मांग की। और इस्राएल और अन्य राष्ट्रों की आशीषों और श्रापों के परिणाम प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दाऊद के राजकीय वंश से बंधे हुए थे।

सार्वभौमिक और राष्ट्रीय वाचाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए, हमें अब नई वाचा को देखना चाहिए, जो कि पुराने नियम में उल्लिखित अंतिम मुख्य वाचा है।

नई वाचा

पुराने नियम के बाद के इतिहास में इस्राएल के भविष्यद्वक्ताओं ने ऐसे समय का सामना किया जब इस्राएल बंधुआई में से होकर गया। फिर भी, उन्होंने एक ऐसी वाचा के बारे में बोला जो बंधुआई के बाद स्थापित होगी। ठीक उसी समय, इस्राएल अपने पापों से पश्चाताप करेगा और परमेश्वर इतिहास को उसके अंतिम, पूर्ण स्तर तक लाएगा। और इन आशीषों के साथ, भविष्यद्वक्ताओं ने कहा कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ एक अंतिम वाचा बाँधेगा। इस अंतिम वाचा का उल्लेख बाइबल में कई स्थानों पर किया गया है, परंतु सुनिए कैसे यिर्मयाह 31:31 नई वाचा के विषय में सीधा-सीधा बोलता है :

> फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बाँधूँगा। (यिर्मयाह 31:31)

नई वाचा की रचना परमेश्वर के लोगों को उस समय संचालित करने के लिए की गई जब परमेश्वर ने बंधुआई के बाद अपने लोगों को पुनर्स्थापित करने और उनके द्वारा पृथ्वी की छोर तक अपने राज्य का विस्तार करने की अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा किया। और इसी कारण, हम नई वाचा को "पूर्णता की वाचा" कह सकते हैं।

हम आने वाले अध्यायों में नई वाचा को और अधिक निकटता से देखेंगे। इसलिए इस स्थान पर हम केवल यही दर्शाएँगे कि यह कैसे प्रकट हुई। नया नियम हमें बताता है कि पूर्णता का यह युग मसीह के

पहले आगमन के साथ आरंभ हुआ। क्रूस पर उसके छुटकारे के कार्य, उसके पुनरूत्थान की विजय, उसके स्वर्गारोहण, पिंतेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उंडेले जाने तथा प्रेरितों के कार्य - इन सब घटनाओं ने बाइबल के इतिहास में इस नए युग का सूत्रपात किया। हमारे दिनों में, हम नई वाचा की निरंतरता का अनुभव करते हैं जब सुसमाचार के द्वारा मसीह में विश्वास पृथ्वी की छोर तक फ़ैल रहा है। और हम नई वाचा की पराकाष्ठा को उस समय देखेंगे जब यीशु का पुनरागमन होता है और वह सब कुछ नया कर देता है।

नई वाचा मसीह के पहले आगमन से उसके महिमामय आगमन तक की प्रत्येक धर्मवैज्ञानिक संरचना को चित्रित करती है। इतिहास के इस बिंदु पर परमेश्वर की परोपकारिता तब पहले के किसी भी समय से बढ़कर थी जब उसने मसीह के द्वारा कार्य किया, पवित्र आत्मा को उंडेला और प्रेरितों के द्वारा सेवकाई की। नए नियम का प्रकाशन भी हमें उन असंख्य तरीकों की याद दिलाता है जिनमें हम अपने समय में बहुत सी भलाइयों को प्राप्त करते हैं, परंतु जब मसीह का पुनरागमन होगा तब हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में अपनी पूर्ण मीरास की दया को प्राप्त करेंगे।

इसके अतिरिक्त, पृथ्वी पर यीशु के समय का नए नियम का विवरण बल देता है कि सब लोगों को उसके प्रति विश्वासयोग्य होना आवश्यक था। यह उसके दिनों में सत्य था, और यह हमारे दिनों में भी निरंतर सत्य बना रहता है। और नया नियम स्पष्ट करता है कि जब मसीह वापस आएगा, तो हम सब उसे अटल विश्वासयोग्यता प्रदान करेंगे।

नए नियम का प्रकाशन आशीषों और श्रापों के नई वाचा के परिणामों को भी दर्शाता है। यह उन लोगों के चुनावों के असंख्य परिणामों को दर्शाता है जिनका मसीह के राज्य के आरंभ के दौरान मसीह और प्रेरितों के साथ संपर्क रहा था। यह उन तरीकों को दर्शाता है जिनमें हमें अब आज्ञाकारिता और अवज्ञाकारिता के परिणामों पर ध्यान देना है। और निस्संदेह , मसीह के पुनरागमन के नए नियम के दर्शन में अंतिम, अनंत दंड और पुरस्कार के वाचाई परिणाम शामिल होते हैं।

अतः हम देखते हैं कि छह मुख्य ईश्वरीय वाचाओं ने उस समय के धर्मविज्ञान को इतना भर दिया कि वे हमें पुराने नियम के मुख्य ऐतिहासिक युगों के विभिन्न प्रभावों की समझ प्रदान करते हैं। आदम की वाचा ने बुनियाद के युग का परिचय दिया; नूह की वाचा ने प्राकृतिक स्थिरता को आरंभ किया; अब्राहम की वाचा ने इस्राएल के लिए प्रतिज्ञाओं को स्थापित किया; मूसा की वाचा ने परमेश्वर की व्यवस्था का परिचय दिया; दाऊद की वाचा ने राजत्व पर बल दिया और नई वाचा पूर्व की सभी वाचाओं को उनकी पूर्णता में लेकर आई।

संगठित एकता

वाचा के प्रत्येक युग के महत्व में भिन्नताओं के बावजूद भी हम इन युगों के धर्मविज्ञान की संगठित एकता के बारे में बात कर सकते हैं। पुराने नियम के इतिहास के युग एक दूसरे से पूरी तरह से भिन्न नहीं थे। इसकी अपेक्षा, उन्होंने जीवित प्राणियों में होने वाली वृद्धि के चरणों के समान एक दूसरे के साथ निरंतरता को प्रदर्शित किया।

इस संगठित एकता को पूरी तरह से समझने के लिए हम वाचा के विभिन्न युगों के बीच के संबंधों के तीन पहलुओं की खोज करेंगे। पहला, हम ध्यान देंगे कि कैसे पुराने नियम की वाचाएँ परमेश्वर के राज्य के प्रशासनों के रूप में एकीकृत थीं। दूसरा, बाद की वाचाओं के लिए पहले की वाचाओं के परिणामी अधिकार को देखेंगे। और तीसरा, हम पहले की वाचाओं के प्रति बाद की वाचाओं के प्रयोग या लागू किए जाने की आवश्यकता के बारे में बात करेंगे। आइए पहले हम उसके राज्य के प्रशासनों के रूप में परमेश्वर की वाचाओं की एकता को देखें।

राज्य का प्रशासन

पवित्रशास्त्र की मुख्य ईश्वरीय वाचाओं ने उन मुख्य तरीकों के रूप में कार्य किया जिनमें परमेश्वर ने इसकी विभिन्न ऐतिहासिक अवस्थाओं के द्वारा अपने राज्य को संचालित किया। जैसे जैसे पुराने नियम का इतिहास पूरे संसार में परमेश्वर के राज्य को फ़ैलाने के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ा, तो परमेश्वर ने विशेष समयों में विशेष तरीकों से अपने राज्य में जीवन की अगुवाई करने के लिए विभिन्न वाचाओं को स्थापित किया। परंतु पुराने नियम की सभी वाचाओं ने समान परम लक्ष्य को साझा किया : अर्थात् पूरी पृथ्वी पर परमेश्वर के महिमामय राज्य को पहुँचाना।

वाचाओं के इस प्रशासकीय कार्य को हमारा मार्गदर्शन ऐसे करना चाहिए कि हम वाचाओं के बीच गहन एकता की अपेक्षा करें। वे कोई अलग-अलग कार्यक्रम नहीं थे जो एक दूसरे की अवहेलना या विरोध करते हों। वे राज्य के अपने एक ही उद्देश्य के द्वारा अभिन्न रूप से एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई थीं। वास्तव में, जिस क्रम में पुराने नियम की वाचाएँ प्रकट होती हैं, वह उनकी एकता को दर्शाता है। आदम की वाचा ने परमेश्वर के राज्य के लक्ष्य को और उस लक्ष्य को पूरा करने की मनुष्य की सेवा की बुनियादी अवधारणाओं को स्थापित किया। नहू की वाचा ने प्राकृतिक स्थिरता को ऐसे क्षेत्र के रूप में स्थापित किया जिसमें विफल होती हुई मनुष्यजाति को परमेश्वर के राज्य के लक्ष्य तक पहुँचने का अवसर मिल सके। अब्राहम की वाचा ने इस्राएल को एक ऐसे प्रजातीय समूह के रूप में स्थापित किया जो शेष मनुष्यजाति का मार्गदर्शन परमेश्वर के राज्य के लक्ष्य की ओर करेगा। मूसा की वाचा ने व्यवस्था को ऐसे प्रकट किया जो इस अग्रणी राष्ट्र की अगुवाई राज्य के लक्ष्य की ओर करेगी। दाऊद की वाचा उनकी अगुवाई उसी लक्ष्य की ओर करने के लिए एक स्थाई राजवंश को लेकर आई। और अंततः, नई वाचा मनुष्यजाति की विफलता को स्थाई रूप से पूरी तरह से दूर करती है और परमेश्वर के राज्य के लक्ष्य को पूरा करती है। पुराने नियम की वाचाओं के बीच के तार्किक अर्थ यह दर्शाते हैं कि वे सब परमेश्वर के राज्य के प्रशासनों के रूप में एकीकृत थे।

अब जबकि हमने यह देख लिया है कि पुराने नियम की वाचाओं ने परमेश्वर के राज्य के एक लक्ष्य का प्रशासन किस प्रकार किया, इसलिए अब हमें उनके अधिकार के आधार पर उनकी संगठित एकता की ओर देखना चाहिए।

चिरस्थाई अधिकार

जब हम यह देखते हैं कि कैसे पहले के वाचाई युगों के अस्तित्व को बाद की अवधियों की संरचनाओं में स्वीकार किया गया है, तो यह शीघ्र ही स्पष्ट हो जाता है कि पहले की वाचाओं का अधिकार सदैव बाद की वाचाओं तक भी पहुँचता है। यह दिखाने के असंख्य तरीके हैं कि यह सत्य है, परंतु सरलता के कारण हम केवल दो दिशाओं की ओर देखेंगे; पहली, मूसा से पहले की वाचाओं का सतत अधिकार; और दूसरी, मूसा के साथ बाँधी गई वाचा का सतत अधिकार।

जब हम यह देखते हैं कि कैसे मूसा ने उन ईश्वरीय वाचाओं का संचालन किया जो उससे पहले आई थीं, तो इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि उसने उन्हें अपने स्वयं के दिनों के लिए अधिकारपूर्ण समझा। उत्पत्ति की पुस्तक पर ध्यान दें, जहाँ मूसा ने आदम, नूह और अब्राहम के साथ बाँधी गई वाचाओं के बारे में लिखा। ये तीनों वाचाएँ मूसा के दिनों से बहुत पहले स्थापित हो गई थीं, परंतु उसने अपने समय में रह रहे इस्राएलियों पर उनके अधिकार की पुष्टि करने के लिए उत्पत्ति में उनके बारे में लिखा। मूसा की मान्यता यह नहीं थी कि आदम, नूह और अब्राहम से बाँधी गई पहले की वाचाएँ बदल दी गई हैं या रद्द कर दी गई हैं। उसने उनके बारे में लिखा, जैसे कि उत्पत्ति में, क्योंकि उसका मानना था कि सीनै पर स्थापित व्यवस्था की वाचा के अधीन उनका इस्राएलियों के जीवनों पर अधिकार था। पहले की वाचाओं में मूसा के समय में रहने वाले लोगों के जीवनों का मार्गदर्शन करने का अधिकार अभी भी था।

दूसरा, जब हम स्वयं मूसा के साथ बाँधी हुई वाचा पर ध्यान देते हैं, तो यह भी स्पष्ट हो जाता है कि उसका उसके समय के बाद भी सतत अधिकार रहा था। उदाहरण के लिए, सुनिए किस प्रकार सुलैमान ने 2 इतिहास 6:16 में दाऊद की वाचा और मूसा की वाचा के विषय में एक साथ बात की है :

> इसलिये अब हे इस्राएल के परमेश्‍वर यहोवा, इस वचन को भी पूरा कर, जो तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था, 'तेरे कुल में मेरे सामने इस्राएल की गद्दी पर विराजनेवाले सदा बने रहेंगे, यह हो कि जैसे तू अपने को मेरे सम्मुख जानकर चलता रहा, वैसे ही तेरे वंश के लोग अपनी चाल चलन में ऐसी चौकसी करें, कि मेरी व्यवस्था पर चलें।' **(2 इतिहास 6:16)**

इस अनुच्छेद में, सुलैमान ने पहले दाऊद के साथ बाँधी गई राजवंश की वाचा का उल्लेख किया जब उसने कहा कि "तेरे कुल में मेरे सामने इस्राएल की गद्दी पर विराजनवाले सदा बने रहेंगे।" परंतु ध्यान दें कि कैसे बड़ी सरलता से सुलैमान मूसा की वाचा की ओर गया। उसने जोड़ा कि दाऊद के वंश केवल तभी राज्य करेंगे जब वे "अपनी चाल चलन में ऐसी चौकसी करें, कि मेरी व्यवस्था पर चलें।" सुलैमान के शब्द यहाँ प्रदर्शित करते हैं कि मूसा की व्यवस्था दाऊद की वाचा की स्थापना के बाद भी परमेश्वर के लोगों के लिए अधिकारपूर्ण बनी रही।

अब एक क्षण में हम जो कुछ हमने यहाँ देखा है उसमें कुछ और योग्यताओं को जोड़ने जा रहे हैं, परंतु ये उदाहरण दर्शाते हैं कि पुराने नियम की बाद की वाचाओं ने उस अधिकार को किसी भी रीति से कम नहीं किया जो आरंभिक वाचाओं में प्रकट किया गया था। इसके विपरीत पहले के वाचाई युगों की धर्मवैज्ञानिक संरचना के बाद के युगों में स्थाई अधिकार बने रहे।

विस्तृत प्रयोग

अब, जितना महत्व पहले की वाचाओं के चिरस्थाई अधिकार को पहचानना है, उतना ही हमारे द्वारा यह मान लेना है कि पहले की वाचाओं के धर्मविज्ञान को बाद की अवधियों में पहुँचाने के कार्य में सदैव सावधानीपूर्ण प्रयोग की आवश्यकता होती है। पहले के युगों के सिद्धांतों को ऐसे रूपों में लागू किया जाना आवश्यक था जो बाद के समयों के लिए उचित थे।

इसके बारे में इस तरह से सोचें। प्रत्येक अभिभावक जानता है कि जब हम बच्चों को निर्देश देते हैं, तो उन निर्देशों का उनकी आयु के अनुसार सही होना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, हममें से अधिकाँश लोग एक चार वर्ष के बच्चे को यह कहेंगे, "चूल्हे को मत छुओ।" परंतु कल्पना करें कि एक सुबह आप अपनी 18 वर्षीय बेटी से नाश्ता बनाने को कहें, और वह आपसे यह कहे, "मैं नहीं बना सकती। आपने मुझसे कहा था कि मैं चूल्हे को न छूऊँ।" आपका प्रत्युत्तर क्या होगा? आप शायद कुछ ऐसा कहेंगे, "अब तुम चार वर्ष की नहीं रह गई हो। तुम्हारे लिए चूल्हे को छूना अब ठीक है।" परंतु मान लो कि वह लापरवाह हो और अपना हाथ जला ले। तब आप शायद यह कहेंगे, "तुम सावधान क्यों नहीं थी? मैंने तुम्हें बताया था कि चूल्हे खतरनाक होते हैं।" और वह शायद विरोध करते हुए कहे, "आपने मुझे कभी नहीं बताया कि चूल्हे खतरनाक होते हैं।" आप इसका उत्तर कैसे देंगे? आप शायद सही रूप से यह कहें, "मैने जब भी तुमसे कहा था कि चूल्हे को मत छूओ तब मैंने तुम्हें सचेत किया था कि चूल्हे खतरनाक होते हैं।" जब आप अपनी बेटी से ऐसे बात करते हैं, तो आप उसे दो मुख्य बातें बताते हैं। एक ओर, आप नहीं चाहते कि वह चार वर्ष की बच्ची की तरह व्यवहार करे, परंतु दूसरी ओर, आप यह भी नहीं चाहते कि वह उन शिक्षाओं को भूल जाए जो आपने उसे तब दी थीं जब वह चार वर्ष की बच्ची थी।

लगभग इसी तरह से, परमेश्वर ने पूरे पुराने नियम में अपने लोगों के साथ परिपक्व होते हुए बच्चों के रूप में व्यवहार किया। और इसी कारण, परमेश्वर के लोगों को दो बातें स्मरण रखनी पड़ीं। पहली, उन्हें ऐसे जीवन की ओर नहीं मुड़ना चाहिए जैसे कि वे पिछले वाचाई युग में रह रहे हों। ऐसा करने का अर्थ

परमेश्वर की ओर से दिए गए नए तथा अधिक परिपूर्ण प्रकाशनों को अस्वीकार करना होगा। दूसरी, बाद की अवधियों के परमेश्वर के लोगों को वह ज्ञान कभी नहीं भूलना था जिनसे परमेश्वर ने पहले के युगों में शिक्षा दी थी। उन्हें पहले के युगों के धर्मविज्ञान को ऐसे लागू करना था कि वह परमेश्वर के प्रकाशन के नए कार्य और वचन प्रकाशनों पर ध्यान देता हो। उदाहरण के लिए, नूह की वाचा आदम के साथ बाँधी गई परमेश्वर की बुनियादी वाचा के धर्मविज्ञान पर निर्मित थी, परंतु पहली वाचा के सिद्धांतों को ऐसे व्यवस्थित किया गया कि वे प्राकृतिक स्थिरता के महत्व में उपयुक्त बैठें, क्योंकि नूह के दिनों में राष्ट्र पूरे संसार में फ़ैल गए थे।

अब्राहम की वाचा ने आदम के दिनों के बुनियादी सिद्धांतों और नूह के युग की प्राकृतिक स्थिरता को अपनाया। फिर भी, अब्राहम के समय तक, परमेश्वर ने अपने वाचाई ध्यान को अपने पसंदीदा लोगों के रूप में मुख्य रूप से इस्राएल पर केंद्रित कर दिया था। और इसी कारण, पहले की वाचाओं की सार्वभौमिक धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को ऐसे रूपों में इस्राएल के कुलपतियों पर लागू किया जाना था जो चुने हुए लोगों के रूप में उनके लिए उचित थे। उदाहरण के लिए, फूलने-फलने और पूरी पृथ्वी पर अधिकार करने की आदम को दी गई आज्ञा विशेष रूप से एक जाति के रूप में इस्राएल के संख्या में बढ़ने और प्रतिज्ञा की भूमि को अधिकार में ले लेने पर लागू की गई थी। प्राकृतिक स्थिरता की प्रतिज्ञा इस्राएल के कुलपतियों पर लागू की गई थी जब उन्होंने प्रतिज्ञा की भूमि पर प्रकृति की आशीषों का आनन्द लिया।

मूसा की व्यवस्था की वाचा आदम की बुनियाद, नूह की स्थिरता और अब्राहम की प्रतिज्ञाओं तक पहुँची, परंतु मूसा ने इन पहले की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को बड़े सावधानीपूर्ण तरीकों में अपने समय में रहने वाले इस्राएलियों पर लागू किया। पहले की वाचाओं की नीतियों को सीनै पहाड़ पर परमेश्वर द्वारा प्रकट आराधना और सामाजिक जीवन के विशेष नियमों के प्रकाश में देखा जाना था।

दाऊद की राजवंश की वाचा ने आदम की बुनियाद, नूह की प्राकृतिक स्थिरता, अब्राहम की प्रतिज्ञाओं और मूसा की व्यवस्था पर और अधिक निर्माण किया। परंतु एक बार जब दाऊद का राजवंश स्थापित हो गया, तो पहले की इन सारी धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को दाऊद के राजवंश, यरूशलेम और इसके मंदिर की केंद्रीयता के प्रकाश में देखा जाना था।

हम इस विषय को इस प्रकार सारगर्भित कर सकते हैं। पुराने नियम के संपूर्ण युग-संबंधी विकासक्रम में, यह विषय कभी नहीं रहा है कि क्या पहले की वाचाओं के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण बाद की अवधियों पर लागू होते हैं या नहीं; बल्कि महत्वपूर्ण प्रश्न यह था कि वे कैसे लागू होते हैं। इस प्रश्न का उत्तर देना पुराने नियम के प्रति युग-संबंधी ऐतिहासिक दृष्टिकोणों का एक निरंतर चलते रहने वाला कार्य है।

अब जबकि हमने यह देख लिया है कि पुराने नियम का धर्मविज्ञान किस प्रकार एक वाचाई युग से दूसरे में विकसित हुआ, इसलिए हमें अपने तीसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए : बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने उन तरीकों को कैसे खोजा जिनमें पुराने नियम के इतिहास में विशेष विषय विकसित हुए।

विषय-संबंधी विकास

हमने पहले ही देख चुके हैं कि एक मित्र को पिछले वर्ष की घटनाओं के बारे में पत्र लिखने की एक रणनीति इस बात का वर्णन करना है कि कितनी महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं और साथ ही वर्ष को विशेष अवधियों में विभाजित कर देना है। यह दृष्टिकोण उन तरीकों के समान है जिनमें बाइबल के धर्मविज्ञानी पुराने नियम के युग-संबंधी विकास का अध्ययन करते हैं। उसी वर्ष के बारे में लिखने के लिए एक दूसरा

तरीका आपके जीवन के विशेष क्षेत्रों, जैसे अपने परिवार, अपनी कलीसिया, अपनी आत्मिक दशा को लेकर यह वर्णन करना होगा कि इनमें से प्रत्येक क्षेत्र किस प्रकार पूरे वर्ष के दौरान एक-एक करके विकसित हुआ। इस पत्र का प्रत्येक अनुच्छेद शायद कुछ ऐसे आरंभ हो : "पिछले वर्ष मेरे परिवार में यह हुआ।" "पिछले वर्ष मेरी कलीसिया में यह हुआ।" "पिछले वर्ष मेरे आत्मिक जीवन में यह हुआ।"

लगभग इसी रूप में, पुराने नियम के धर्मविज्ञान के विकास का वर्णन विशेष विषयों के आधार पर किया जा सकता है। इस बात को समझने के लिए कि यह दृष्टिकोण कैसे कार्य करता है, हम दो दिशाओं की ओर देखेंगे। पहली, हम यह देखेंगे कि बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने विधिवत धर्मविज्ञान में से पारंपरिक विषयों के साथ किस प्रकार व्यवहार किया है। और दूसरी, हम बाइबल के प्रतीक विज्ञान के विशेष विषय को देखेंगे। आइए उन तरीकों से आरंभ करें जिनमें विधिवत धर्मविज्ञान ने बाइबल के धर्मविज्ञानियों के लिए विषय-संबंधी विचारों की रचना की है।

पारंपरिक विषय

पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान के विषय बहुत ही अच्छी तरह से स्थिर बातों के समूह में विकसित हुए हैं। अधिकांश भागों में, विधिवत धर्मविज्ञानी सबसे पहले परमेश्वर-विज्ञान को संबोधित करते हैं। फिर वे मानव-विज्ञान, अर्थात् मनुष्यजाति की धर्मशिक्षा, की ओर मुड़ते हैं, और विशेष रूप से मनुष्य की उद्धार की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इसके बाद उद्धार-विज्ञान आता है; जो कि उद्धार की धर्मशिक्षा है। तब कलीसिया-शास्त्र, अर्थात् कलीसिया की धर्मशिक्षा, ध्यान आकर्षित करती है, और अंततः युगांत-विज्ञान, अर्थात् अंत की बातों की धर्मशिक्षा आती है।

समय समय पर, बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने भी इन मूलभूत श्रेणियों का अनुसरण करते हुए पुराने नियम के धर्मविज्ञान को सारगर्भित किया है। और ऐसा कम से कम दो कारणों से हुआ है। एक ओर, पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान का एक बहुत ही लंबा इतिहास रहा है और यह बाइबल के धर्मविज्ञानियों के लिए बहुत ही उपयोगी रहा है। वास्तव में, पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान के परिणाम इतने सकारात्मक रहे हैं कि अक्सर बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने वहाँ से काफी सहायता प्राप्त की है। अच्छे विधिवत धर्मविज्ञान ने पूरी तरह से बाइबल आधारित होने का प्रयास किया है और जहाँ तक उस लक्ष्य को प्राप्त किया गया है, उसमें विधिवत धर्मविज्ञानियों के पास बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को देने के लिए बहुत कुछ है। विधिवत धर्मविज्ञान को बाइबल आधारित धर्मविज्ञान से जितनी प्रेरणा की आवश्यकता है, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को भी विधिवत धर्मविज्ञान की उतनी ही समृद्ध धरोहर और स्थिरता की आवश्यकता है।

दूसरी ओर, विधिवत धर्मविज्ञान के विषयों को अक्सर ऐतिहासिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में ले लिया गया है क्योंकि बहुत से सुसमाचारिक लोगों का मानना यह है कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का उद्देश्य विधिवत धर्मविज्ञान के लिए व्याख्या संबंधी जानकारी प्रदान करना है। पहले के एक अध्याय में, हमने देखा था कि उनमें पाई जाने वाली विभिन्नताओं के बावजूद भी चार्ल्स होज़, बेंजामिन बी. वारफील्ड और गियरहार्डस फ़ोस जैसे अत्यधिक प्रभावशाली लोगों ने बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को ऐसे देखा जैसे पवित्रशास्त्र को विधिवत धर्मविज्ञान पर प्रभाव डालने के लिए लाया गया है। फलस्वरूप, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को अक्सर परिणाम के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि एक ऐसे विधिवत धर्मविज्ञान को विकसित करने के माध्यम के रूप में देखा जाता है जो पवित्रशास्त्र के प्रति सच्चा हो।

इन और अन्य कारणों से बाइबल के धर्मविज्ञानियों के लिए यह लगभग असंभव है कि वे स्वयं को पूरी तरह से विधिवत धर्मविज्ञान से स्वतंत्र कर लें, जब वे पुराने नियम के विशेष विषयों के विकास की खोज करते हैं। और जब वे पवित्रशास्त्र के अपने अध्ययन से उत्पन्न नई अंतर्दृष्टियों का परिचय कराते

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हैं, तब भी विधिवत धर्मविज्ञान उनके विचार-विमर्श को महत्वपूर्ण रूपों में मार्गदर्शित करता है। बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर-विज्ञान, मानव-विज्ञान, उद्धार-विज्ञान, कलीसिया-शास्त्र और युगांत-विज्ञान के आधार पर पुराने नियम का अध्ययन किया। परंतु जब बाइबल के धर्मविज्ञानी ऐतिहासिक विकासक्रम को ध्यान में रखते हैं, तो वे इन विषयों से संबंधित यह विशेष प्रश्न पूछते हैं : पुराने नियम के धर्मवैज्ञानिक परिवर्तनों के इतिहास में यह धर्मशिक्षा कैसे विकसित या परिपक्व हुई?

उदाहरण के लिए, एक बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी परमेश्वर-विज्ञान का अध्ययन कर सकता है। परंतु पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान के समान अनंत त्रिएकता की धर्मशिक्षा पर ध्यान लगाने की अपेक्षा, एक बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी पुराने नियम की विभिन्न अवधियों के दौरान के परमेश्वर के विशिष्ट कार्य और वचन प्रकाशनों को देखेगा, और वह सदैव सावधान रहेगा कि बाद के प्रकाशन का उल्लंघन न करे, परंतु साथ ही इसके प्रति भी सावधान रहेगा कि बाद के प्रकाशनों को पहले की अवधियों में न ढूँढे। बाइबल का धर्मविज्ञानी शायद यह पूछे, "आदम के समय में परमेश्वर ने अपने बारे में क्या प्रकट किया?" "नूह के समय में परमेश्वर ने अपने बारे में क्या प्रकट किया?" "परमेश्वर के विषय में मूसा की धर्मशिक्षा क्या थी?" इत्यादि। जब परमेश्वर ने इतिहास में कार्य किया और बात की तो उसने स्वयं को और अधिक प्रकट किया। इसी कारण, परमेश्वर की धर्मशिक्षा पुराने नियम के इतिहास में इन्हीं रूपों में विकसित हुई।

इसी प्रकार, बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने खोजा है कि किस प्रकार मानव-विज्ञान, उद्धार-विज्ञान, कलीसिया-शास्त्र और युगांत-विज्ञान भी पुराने नियम से विकसित हुए। पुराने नियम ने मनुष्य की अवस्था पर किस प्रकार एक दृष्टिकोण को विकसित किया? इसने उद्धार के मार्ग को एक समय में एक चरण के रूप में कैसे प्रदर्शित किया? पुराने नियम ने विभिन्न अवधियों में परमेश्वर के लोगों के विषय के साथ कैसे व्यवहार किया? इसने प्रगतिशील रूप में अंत के दिनों के विषय में एक दृष्टिकोण को किस प्रकार दर्शाया?

जब बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने इनमें से प्रत्येक पारंपरिक विषयों पर ध्यान केंद्रित किया है, तो उन्होंने अक्सर ऐसी नई अंतर्दृष्टियों को खोजा है जिन्हें पांरपरिक विधिवत धर्मविज्ञान में अनदेखा कर दिया गया था। कई बार, उन्होंने ऐसे तरीकों को भी खोजा है जिनमें विधिवत धर्मविज्ञान को बाइबल आधारित धर्मविज्ञान द्वारा सुधारा जाना चाहिए।

अब जबकि हमने यह समझ लिया है कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में विषय-संबंधी विकास विधिवत धर्मविज्ञान से कैसे संबंध रखते हैं, इसलिए हमें पुराने नियम के विषय-संबंधी विकास के दूसरे पहलू की ओर मुड़ना चाहिए। हमारे ध्यान में यहाँ एक विशेष ऐतिहासिक विषय है जिसे अक्सर "बाइबल आधारित प्रतीक विज्ञान" कहा जाता है।

प्रतीक विज्ञान

जब मसीही पासवान या शिक्षक किसी अन्य बात के प्रतीक होने के बारे में बात करते हैं, तो वे अक्सर पुराने नियम के पहलूओं को मसीह या मसीही विश्वास के अन्य पक्षों के प्रतीकों के रूप में दर्शाते हैं। और हम अक्सर अपने में अचंभा करते हैं, "उन्होंने इस तरह के प्रतीकों को कैसे निकाला?" "उन्होंने इसे कैसे न्यायोचित ठहराया?" और फिर उस संबंध में हम शायद यह भी पूछें, "वास्तव में यह प्रतीक है क्या?" बाइबल आधारित प्रतीक विज्ञान के बारे में बहुत सी गलत धारणाएँ हैं, इसलिए यह कोई अश्चार्य की बात नहीं है कि हम इस तरह के प्रश्न पूछते हैं।

बाइबल के पुराने नियम के धर्मविज्ञान में प्रतीक विज्ञान की खोज करने के लिए हम तीन भिन्न-भिन्न विषयों को स्पर्श करेंगे। पहला, हम परिभाषित करेंगे कि शब्द बाइबल आधारित प्रतीक विज्ञान से हमारा क्या अर्थ है; दूसरा, हम प्रतीक विज्ञान की पाँच महत्वपूर्ण विशेषताओं को देखेंगे; और तीसरा, हम प्रतीकों

को पहचानने की प्रक्रिया की खोज करेंगे। आइए पहले बाइबल आधारित प्रतीक विज्ञान की परिभाषा को देखें।

परिभाषा

अन्य शिक्षण संकायों जैसे विज्ञान और साहित्यिक अध्ययनों में शब्द "प्रतीक विज्ञान" का प्रयोग विभिन्न रूपों में किया जाता है। फिर भी, इस अध्याय में हमारा ध्यान बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में प्रतीक विज्ञान के विचार से है। बहुत ही विस्तृत अर्थ में, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पुराने नियम के धर्मविज्ञान में किसी भी ऐतिहासिक विकास के विषयों पर शब्द प्रतीक विज्ञान को लागू करता है। एक विषय की ऐतिहासिक अवस्था का प्रत्येक चिह्न शब्द के इस सामान्य भाव में प्रतीक की रचना करता है। कई अवसरों पर, बाइबल के धर्मविज्ञानी परमेश्वर की धर्मशिक्षा के प्रतीक, या आराधना के प्रतीक के बारे में बात करेंगे, उनका सरल रूप में यह अर्थ है कि इन रूपों में बाइबल में ये विषय विकसित हुए हैं। परंतु बहुत बार, बाइबल के आधुनिक धर्मविज्ञानियों ने शब्द प्रतीक विज्ञान का बहुत अधिक संकीर्ण रूप में प्रयोग किया है। हम इस रूप में इसे विशेष अर्थ में सारगर्भित कर सकते हैं।

> बाइबल आधारित प्रतीक विज्ञान पवित्रशास्त्र के महत्वपूर्ण व्यक्तियों, संस्थाओं और घटनाओं से निकटता से जुड़ी धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं के बीच के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन है।

सरल भाषा में, हम कह सकते हैं कि प्रतीक विज्ञान प्रकारों/प्रतीकों का अध्ययन है। शब्द "प्रतीक" यूनानी भाषा के शब्द टूपोस से आता है, जिसका नए नियम में पंद्रह बार प्रयोग किया गया है। नए नियम के तीन महत्वपूर्ण अनुच्छेदों में नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम की विशिष्ट धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं को नए नियम की अन्य धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं के "प्रतीकों" के रूप में संबोधित किया है।

उदाहरण के लिए, सुनिए रोमियों 5:14 में प्रेरित पौलुस ने आदम के बारे मे क्या कहा है।

> तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्होंने उस आदम, जो उस आनेवाले का चिह्न है, के अपराध के समान पाप न किया। **(रोमियों 5:14)**

यहाँ पर ध्यान दें, पौलुस ने घोषणा की कि आदम "आने वाले का चिह्न" था। यहाँ "चिह्न" के रूप में अनूदित यूनानी शब्द टूपोस है। व्यापक संदर्भ से हम जानते हैं कि जो आने वाला है, वह मसीह है। अतः इस विषय में पौलुस ने ध्यान दिया कि आदम मसीह का एक प्रतीक था।

1 पतरस 3:20-21 में पुराने नियम के प्रतीक के नए नियम के समरूप को "प्रतिरूप" के समान रखा गया है। वहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> नूह के दिनों . . . आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा . . . अब तुम्हें बचाता है। **(1 पतरस 3:20-21)**

इस अनुच्छेद में "का दृष्टान्त भी" के रूप में अनूदित यूनानी शब्द ऐंटीटूपोस या "प्रतिरूप" है। अतः, इस उदाहरण में, मसीही बपतिस्मे को नूह की जलप्रलय के नए नियम के समरूप के समान प्रस्तुत किया गया है।

कुलुस्सियों 2:17 में प्रेरित पौलुस ने एक बार शब्दों में महत्वपूर्ण परिवर्तन के साथ पुराने नियम की रस्म-संबंधी व्यवस्था के बारे में बात की।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएँ मसीह की हैं। **(कुलुस्सियों 2:17)**

यहाँ पौलुस ने मूसा की रस्म-संबंधी व्यवस्था को "छाया" (यूनानी में स्किआ) और "आने वाली बातों" को "मसीह में मूल वस्तुएँ" कहा। इसी तरह से, इब्रानियों के लेखक ने भी प्रतीकों को छाया और प्रतिरूपों को वास्तविकताओं के रूप में कहा।

फिर भी, नए नियम के लेखकों ने अक्सर बाइबल के प्रतीकों पर ध्यान देते समय किसी भी विशेष शब्दावली का प्रयोग नहीं किया। उन्होंने केवल पुराने नियम और नए नियम के विशेष तत्वों को एक दूसरे के साथ जोड़ा या संयुक्त किया। उदाहरण के लिए, सुनिए यूहन्ना 3:14-15 में यीशु ने किस प्रकार मूसा के पीतल के साँप और स्वयं के बीच प्रतीकात्मक संबंध के बारे में बात की।

> जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए। **(यूहन्ना 3:14-15)**

इस अनुच्छेद में यीशु ने बिना किसी विशेष शब्दावली के पीतल के साँप की तुलना अपने क्रूसीकरण से की। परंतु हम फिर भी कह सकते हैं कि साँप क्रूसीकरण का प्रतीक था और क्रूसीकरण साँप का प्रतिरूप था।

प्रतीक विज्ञान के इस मूल विचार को मन में रखते हुए, हमें प्रतीक विज्ञान की कुछ ऐसी ख़ास विशेषताओं की ओर मुड़ना चाहिए जिन्हें बाइबल के धर्मविज्ञानी सामान्यतः पहचानते हैं।

विशेषताएँ

हमारे उद्देश्यों के लिए, हम पाँच विषयों पर ध्यान देंगे। पहला, हम देखेंगे कि कैसे प्रतीक विज्ञान भाषा-अलंकार के रूप में कार्य करता है। दूसरा, हम बाइबल के प्रतीकों के विविध तत्वों पर ध्यान देंगे। तीसरा, हम यह देखेंगे कि प्रतीक धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं की तुलनाएँ हैं। चौथा, हम देखेंगे कि कैसे प्रतीक धर्मवैज्ञानिक विकास को प्रस्तुत करते हैं। और पाँचवाँ, हम बाइबल के कई प्रतीकों के श्रृंखलाबद्ध चरित्र पर ध्यान देंगे। आइए पहले यह देखें कि प्रतीक भाषा के अलंकारों के रूप में कैसे कार्य करते हैं।

भाषाई स्तर पर, यह पवित्रशास्त्र में भाषा के अलंकार, या और अधिक सटीक रूप में कहें तो तुलना के अलंकार के रूप में प्रतीकों की अभिव्यक्ति को देखना सहायक होता है। तुलना के अलंकार किसी और के साथ उनकी तुलना करने के द्वारा बातों का वर्णन करने के अप्रत्यक्ष तरीके हैं, जैसा कि हम, रूपकों या समानताओं, उपमाओं आदि के साथ करते हैं। हम बाइबल के प्रतीकों की मूलभूत क्रियाविधि के विषय में इसे तुलना के एक अलंकार के रूप में देखने के द्वारा बहुत कुछ समझ सकते हैं।

तुलना का प्रत्येक अलंकार तीन मुख्य तत्वों के साथ कार्य करता है : वह स्वरूप जो ऐसी वस्तु है जिसकी तुलना विचाराधीन मुख्य वस्तु से की जाती है; वह विषय जो तुलना की मुख्य वस्तु है; और दो वस्तुओं के मध्य तुलना के मुख्य बिंदु। उदाहरण के लिए, इस सरल उपमा के बारे में सोचें, "वह गगनचुंबी इमारत एक पहाड़ के समान ऊँची है।" इस वाक्य में, स्वरूप "पहाड़" है। यह वह वस्तु है जिसकी मुख्य विषय के साथ तुलना की जा रही है। मुख्य विषय विचाराधीन इमारत, अर्थात् "गगनचुंबी इमारत" है। और तुलना का प्रत्यक्ष बिंदु यह है कि दोनों "ऊँचे" हैं।

अब जब हम वास्तव में तुलना के अलंकारों का प्रयोग करते हैं, तो हम सदैव इन तीनों तत्वों को प्रत्यक्ष रूप से नहीं दर्शाते हैं। परंतु स्वरूप, विषय और तुलना के एक या अधिक बिंदुओं को सफल संप्रेषण हेतु कम से कम तुलना के किसी अलंकार के लिए लागू किया जाता है। ये तीनों तत्व बाइबल के प्रतीक विज्ञान में स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं। पहला, "प्रतीक" एक तस्वीर, अर्थात् एक ऐसी

वस्तु के रूप में कार्य करता है, जिसकी तुलना किसी मुख्य वस्तु से की जा रही है। दूसरा, “प्रतिरूप” एक विषय, अर्थात् वह वस्तु है जिससे प्रतीक की तुलना की जा रही है। और तीसरा, प्रतीक और प्रतिरूप तुलना के एक या अधिक बिंदुओं के द्वारा एक दूसरे से जुड़े होते हैं।

उदाहरण के लिए, आपको स्मरण होगा कि रोमियों 5:14 में प्रेरित पौलुस ने घोषणा की थी कि, “आदम, जो आनेवाले (अर्थात् मसीह) का चिह्न है।” अतः, इस विषय में, आदम वह तस्वीर या प्रतीक है जिसकी तुलना मसीह के साथ की जा रही है, और मसीह प्रतीक या प्रतिरूप है। आदम और मसीह के बीच तुलना के बिंदुओं को रोमियों 5 के व्यापक संदर्भ में स्पष्ट किया गया है। आदम मसीह का एक प्रतीक है क्योंकि आदम के कार्यों और मसीह के कार्यों के ऐसे लोगों पर व्यापक और संबंधित प्रभाव पड़े जो उसके साथ पहचाने गए थे। एक ओर, जो आदम के साथ पहचाने गए वे मर गए। और दूसरी ओर, जो मसीह के साथ पहचाने गए उन्होंने अनंत जीवन प्राप्त किया।

बाइबल आधारित प्रतीक विज्ञान की दूसरी विशेषता यह है कि तुलना किए जाने वाले तत्व बहुत विविध हैं। तुलनाएँ भिन्न प्रकार की वस्तुओं में की जाती हैं। ऐसे तत्वों का वर्गीकरण करने के बहुत से तरीके हैं जो प्रतीकों और प्रतिरूपों के रूप में कार्य करते हैं, परंतु उनके बारे में तीन मूलभूत समूहों में सोचना सहायक होता है। प्रतीक और प्रतिरूप शायद विशिष्ट व्यक्ति, संस्थाएँ या घटनाएँ हो सकती हैं। व्यक्तियों से हमारा अर्थ वे चरित्र हैं जो पवित्रशास्त्र में प्रकट होते हैं, जैसे विशिष्ट मानवीय चरित्र, आत्मिक प्राणी, परमेश्वर और कुछेक अवसरों पर सृष्टि के अन्य मानवीकृत पहलू। संस्थाओं से हमारा अर्थ अटल ऐतिहासिक वास्तविकताओं से है, जैसे महत्वपूर्ण अचल संपत्तियाँ या चिरस्थाई महत्व वाले स्थान, धार्मिक रस्में, संगठन, महत्वपूर्ण इमारतें आदि। और घटनाओं से हमारा अर्थ केवल महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, अर्थात् घटित हुई बातें हैं। प्रतीक और प्रतिरूप इन तीनों तत्वों के प्रत्येक संयोजन से मिल कर बने हो सकते हैं।

नए नियम के प्रतीक विज्ञान के वे उदाहरण जिन पर हमने पहले से ही ध्यान दिया है, इनमें से कुछ विभिन्न बातों को दर्शाते हैं। रोमियों 5:14 में आदम और मसीह के बीच के पौलुस के प्रतीकों ने एक महत्वपूर्ण व्यक्ति की दूसरे महत्वपूर्ण व्यक्ति से तुलना की। 1 पतरस 3:21 में पतरस ने नूह की जलप्रलय की घटना की तुलना मसीही बपतिस्मे के संस्कार से की। यूहन्ना 3:14 में यीशु ने मूसा के द्वारा पीतल के साँप को ऊपर उठाए जाने की घटना की तुलना अपने क्रूसीकरण के साथ की। पवित्रशास्त्र के दूसरे स्थानों पर अन्य संयोजन भी प्रकट होते हैं। जैसा भी हो, प्रतीक महत्वपूर्ण व्यक्तियों, संस्थाओं और घटनाओं की तुलना करते हैं।

तीसरा, बाइबल के प्रतीक सदैव ऐसी धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं की तुलना करते हैं जो उनके तत्वों के साथ घनिष्ठता से जुड़ी होती हैं। दुखद रूप में, अच्छे सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी अक्सर प्रतीक विज्ञान के प्रति इतने आकर्षित हो जाते हैं कि वे पवित्रशास्त्र में जब भी दो बातों के बीच समानता को देखते हैं तो प्रतीकों और प्रतिरूपों को पाते हैं। परंतु उनकी तुलना अक्सर महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक संबंधों की अपेक्षा केवल मात्र आकस्मिक विशेषताओं को ही सम्मिलित करती है।

उदाहरण के लिए, अब्राहम के दो हाथ थे, परंतु यह सोचने का कोई अच्छा कारण नहीं है कि अब्राहम बाद के बाइबल के उन सभी चरित्रों का एक प्रतीक था जिनके दो हाथ थे। यह तथ्य कि पुराने नियम में लोगों ने एक से अधिक बार चोगों को पहना, यह किसी भी तरह से नहीं दर्शाता कि वे एक दूसरे के प्रतीक या प्रतिरूप थे। इस तरह की तुलनाएँ केवल ऐतिहासिक संयोगों को ही दर्शाती हैं।

ऐसी महत्वहीन तुलनाओं से भटकने की अपेक्षा सुस्थापित प्रतीक अपने तत्वों से जुड़ी महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं की तुलनाओं से बने होते हैं। प्रतीकों, व्यक्तियों, संस्थाओं और घटनाओं के तत्व अपने प्रतीकों में अकेले खड़े नहीं होते। वे उपलक्षक, अर्थात् ऐसे छोटे भाग हैं जो बड़े भागों से घनिष्ठता से जुड़े धर्मवैज्ञानिक विचारों को दर्शाने के रूप में कार्य करते हैं। जब बाइबल के लेखकों ने विशिष्ट

व्यक्तियों, संस्थाओं या घटनाओं का प्रतीकों के तत्वों के रूप में उल्लेख किया, तो उनके मन में ऐसी व्यापक धर्मवैज्ञानिक सरंचनाएँ थी जिन्हें उन तत्वों ने प्रस्तुत किया।

उदाहरण के लिए, रोमियों 5:14 में आदम के मसीह के प्रतीक होने के पौलुस के उदाहरण पर ध्यान दें। पौलुस ने इस तथ्य की तुलना नहीं की कि दोनों पुरूषों के बाल थे। उसने इस तथ्य की ओर भी ध्यान आकर्षित नहीं किया कि दोनों के दो-दो आँखे और दो-दो कान थे। इसकी अपेक्षा, पौलुस ने प्रतीक विज्ञान पर ध्यान दिया क्योंकि वह आदम और मसीह के धर्मवैज्ञानिक महत्वों की तुलना कर रहा था। पौलुस की तुलना इस समीक्षा पर आधारित थी कि दोनों पुरूषों का उनके साथ पहचाने जाने वाले लोगों की दशा पर बहुत बड़ा प्रभाव था।

1 पतरस 3:20-21 में नूह की जलप्रलय और मसीही बपतिस्मे के बीच के पतरस के प्रतीक विज्ञान के विषय में भी ऐसा ही कहा जा सकता है। पतरस की पत्री का विस्तृत संदर्भ यह स्पष्ट कर देता है कि उसका मुख्य ध्यान जलप्रलय की धर्मवैज्ञानिक विशेषता के विषय में इस रूप में अधिक था कि नूह ने किस प्रकार ईश्वरीय दंड के संसार को पार करके परमेश्वर द्वारा आशीषित नए संसार में प्रवेश किया। और निस्संदेह, मसीही बपतिस्मा ऐसी ही धारणाओं से जुड़ा हुआ है, क्योंकि यह दंडित किए जाने वाले एक ऐसे संसार से हमारे पार होने और मसीह में नई सृष्टि में प्रवेश करने का चिह्न है। इस स्तर पर पतरस ने नूह के दिनों के जल की तुलना बपतिस्मे के जल से की।

पवित्रशास्त्र के प्रतीकों की चौथी विशेषता यह है कि वे हमेशा ऐतिहासिक विकास को दर्शाते हैं। जब पवित्रशास्त्र प्रतीकों और प्रतिरूपों की पहचान करता है तो वे सदैव इतिहास के विभिन्न समयों और ऐसी अन्य बातों से संबंधित होते हैं, जो उन समयों के बीच के ऐतिहासिक धर्मवैज्ञानिक विकास को दर्शाते हैं। इसी कारण से, जैसा कि तुलना के सभी अलंकारों के साथ होता है, प्रतीकों में उनके तत्वों के बीच समानताएँ और असमानताएँ दोनों शामिल होंगी। एक ओर, हम समानताओं को देखने के योग्य होते हैं। कुछ व्यक्ति, संस्थाएँ और घटनाएँ बाद के व्यक्तियों, संस्थाओं और घटनाओं की प्रतीक होती हैं क्योंकि उनकी धर्मवैज्ञानिक विशेषताएँ एक जैसी थीं। परंतु दूसरी ओर, ये तुलनायोग्य तत्व असमान भी थे; वे कभी भी ठीक एक जैसे नहीं थे। समय के साथ-साथ, प्रतीकों और प्रतिरूपों के मध्य नए प्रकाशन घटित हुए जिनके कारण उनकी धर्मवैज्ञानिक विशेषताएँ विकसित हुईं।

रोमियों 5:14 में एक बार फिर से पौलुस के द्वारा दर्शाए गए प्रतीक के बारे में सोचें जहाँ आदम प्रतीक है और मसीह प्रतिरूप है। अब, जैसा कि हम देख चुके हैं, आदम धर्मवैज्ञानिक रूप से मसीह के इस तरह से समान है कि दोनों का ऐसा व्यापक प्रभाव पड़ा जिसमें परमेश्वर ने उनके साथ पहचाने जाने वाले सभी लोगों को देखा। परंतु हमें इस पर भी ध्यान देना चाहिए कि पौलुस ने ऐतिहासिक विकास के कारण ही उनके बीच की एक बहुत ही महत्वपूर्ण भिन्नता पर बल दिया। सुनिए रोमियों 5:15 में उसने क्या कहा :

> पर जैसी अपराध की दशा है, वैसी अनुग्रह के वरदान की नहीं, क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह और उसका जो दान एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के, अनुग्रह से हुआ बहुत से लोगों पर अवश्य ही अधिकाई से हुआ। (रोमियों 5:15)

यहाँ ध्यान दें कि पौलुस ने केवल आदम और मसीह के बीच की समानताओं को ही नहीं दर्शाया। उसने उनके बीच की महत्वपूर्ण भिन्नता पर भी ध्यान दिया। आदम बाइबल के इतिहास के आरंभिक युग में रहा था और उसकी अवज्ञाकारिता का कार्य मनुष्य के इतिहास में पाप और मृत्यु को लेकर आया। वहीं, मसीह बाइबल के इतिहास के अंतिम चरणों में रहा, जब परमेश्वर के छुटकारे के उद्देश्यों को पूरा होना था। परिणामस्वरूप, मसीह की आज्ञाकारिता अनंत जीवन को लेकर आई। आदम और मसीह के

बीच की भिन्नताएँ पौलुस के प्रतीक विज्ञान के लिए उतनी ही महत्वपूर्ण थीं जितनी उनकी समनाताएँ, और यही बात सब प्रतीकों पर भी लागू होती है।

प्रतीकों की अन्य विशेषता यह है कि वे अक्सर श्रृंखला में प्रकट होते हैं। एक प्रतीक या प्रतिरूप में बने होने की अपेक्षा, वे तीन या उससे अधिक तत्वों की श्रृंखलाओं को सम्मिलित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, पुराने नियम की आराधना के श्रृंखलाबद्ध प्रतीकों पर ध्यान दें। सामान्य अर्थों में, हमें कहना चाहिए कि प्रत्येक चरण में पृथ्वी पर मनुष्यजाति की आराधना ने सदैव स्वर्ग में स्वर्गदूतों द्वारा परमेश्वर की आराधना का अनुसरण किया और उसे दर्शाया है। परंतु पृथ्वी पर की जाने वाली आराधना का कार्य ऐतिहासिक रूप से विकसित हुआ और इन ऐतिहासिक विकासक्रमों ने श्रृंखलाबद्ध प्रतीकों की रचना की। पहला, आराधना आदम और हव्वा के दिनों में तब आरंभ हुई जब परमेश्वर ने उन्हें अपनी पवित्र वाटिका में रखा था। उत्पत्ति 2:15 के विवरण को सुनिए :

> तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे। **(उत्पत्ति 2:15)**

वाटिका में आदम और हव्वा के कार्य का विवरण देने के लिए प्रयोग की गई भाषा असामान्य है। यह पंचग्रंथ में गिनती 3:7-8 और 8:26 जैसे अन्य स्थानों पर भी प्रकट होती है, जहाँ मूसा ने मिलाप के तम्बू में लैवीय सेवकाई का वर्णन किया है। वाटिका में आदम और हव्वा के वर्णन के लिए मूसा द्वारा तम्बू की आराधना की भाषा का प्रयोग दर्शाता है कि मूसा ने अदन की वाटिका और तम्बू के बीच प्रतीक-संबंधी संपर्क को देखा था। यह प्रतीक इस सच्चाई से अभिपुष्ट हो जाता है कि मिलाप वाले तम्बू की वास्तुकला और सजावट ही अदन की वाटिका की मनोहरता को दर्शाती थी।

जिस तरह से मूसा ने अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के कार्यों का वर्णन किया है, वह यह दर्शाता है कि आराधना की धर्मवैज्ञानिक सरंचना अदन की वाटिका के साथ आरंभ हुई थी। जब मनुष्यजाति को वाटिका में से निकाल दिया गया था, तो आराधना में एक ऐतिहासिक विकास घटित हुआ था। जैसे कि हाबिल, शेत, नूह और अब्राहम के उदाहरण दर्शाते हैं, परमेश्वर ने अपने लोगों को बुलाया कि वे विभिन्न स्थानों पर आराधना के लिए वेदियों को बनाने के द्वारा वाटिका के बाहर भी आराधना को जारी रखें।

बाद में जब परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र में से बाहर बुलाया और सीनै पहाड़ पर उसके साथ वाचा बाँधी, तो आराधना में एक और महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विकास घटित हुआ। इस्राएल की आराधना वाचा के संदूक के चारों ओर मिलाप वाले तम्बू, अर्थात् पृथ्वी पर परमेश्वर के पैरों की राजकीय चौकी पर केंद्रित थी। तब, एक बार जब इस्राएल प्रतिज्ञा की भूमि पर स्थापित हो गया था, तो आराधना में एक और ऐतिहासिक विकास घटित हुआ। परमेश्वर ने अपने लोगों को वाचा के संदूक को स्थानांतरित करने और यरूशलेम में मंदिर के स्थाई भवन में आराधना करने के लिए बुलाया।

अंततः जब बेबीलोन ने सुलैमान के मंदिर को नाश कर दिया, तो भविष्यद्वक्ता यहेजकेल ने आराधना के विषय में एक नए प्रकाशन की घोषणा की। उसने भविष्यद्वाणी की कि बंधुआई के बाद पहले से भी बड़े मंदिर का निर्माण होगा जब दाऊद के राजवंश और यरूशलेम की पुनर्स्थापना होगी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यरूब्बाबेल के दिनों के दौरान, भविष्यद्वक्ता हाग्गै और जकर्याह ने इस बात पर बल दिया कि बंधुआई के बाद प्रतिज्ञा की भूमि पर लौटे हुए लोगों को परमेश्वर की आराधना के लिए एक नए मंदिर का निर्माण करना था।

अतः हम अदन की वाटिका के साथ आरंभ होते हुए आराधना की विभिन्न धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं में श्रृंखलाबद्ध प्रतीकों को देखते हैं, जो मूसा के दिनों से पहले आरंभिक वेदियों से मूसा के मिलाप वाले तम्बू, सुलैमान के मंदिर और फिर यरूब्बाबेल के मंदिर तक पहुँचे। पुराने नियम में कई बार परमेश्वर ने महत्वपूर्ण लोगों, संस्थाओं, और घटनाओं से जुड़े महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक विषयों को बार-बार

संबोधित किया। और इन विषयों के प्रति उसके द्वारा बार-बार ध्यान दिए जाने ने अक्सर श्रृंखलाबद्ध प्रतीकों की रचना की।

अब जबकि हमने पवित्रशास्त्र में प्रतीकों की पाँच महत्वपूर्ण विशेषताओं को देख लिया है, इसलिए हमें तीसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए : पुराने नियम में प्रतीकों को कैसे पहचानें। जब हम पुराने नियम के व्यक्तियों, संस्थाओं और घटनाओं से संबंधित विशिष्ट धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं के विकास की खोज करते हैं तो हमें किस प्रक्रिया का अनुसरण करना चाहिए?

पहचान

हम इस प्रश्न का उत्तर प्रतीकों पर दो मुख्य दृष्टिकोणों को लेते हुए देंगे। पहला, प्रतीक विज्ञान को पूर्वानुमान के रूप में देखा जाना। और दूसरा, प्रतीक विज्ञान को प्रतिबिंब के रूप में देखा जाना। आइए पहले प्रतीक विज्ञान को पूर्वानुमान के रूप में देखे। जब हम प्रतीक विज्ञान को पूर्वानुमान के रूप में देखते हैं, तो हमारे मन में यह धारणा होती है कि जब प्रतीक पुराने नियम के इतिहास में प्रकट हुए, तो उनकी रचना भविष्य के प्रतिरूपों की ओर संकेत करने के लिए की गई थी। कलीसिया के संपूर्ण इतिहास में अधिकाँश व्याख्याकारों ने पवित्रशास्त्र के प्रतीकों के साथ कुछ ऐसा ही व्यवहार किया है। इस दृष्टिकोण में, परमेश्वर ने अपनी परम इच्छा में इतिहास के विशिष्ट व्यक्तियों, संस्थाओं और घटनाओं को उन दिनों में रहने वाले लोगों को यह दर्शाने के लिए रखा कि भविष्य में क्या आने वाला है। इस पारंपरिक दृष्टिकोण ने आरंभिक दशकों के सुसमाचारिक बाइबल आधारित धर्मविज्ञान सहित प्रतीक विज्ञान के प्रति अधिकांश मसीही दृष्टिकोणों को चित्रित किया है।

अब हाल ही के दिनों में, बाइबल आधारित कई धर्मविज्ञानियों ने इस पारंपरिक पूर्वानुमानित दृष्टिकोण को ख़ारिज कर दिया है और उस दृष्टिकोण को ले लिया है जिसे अक्सर "अंतरपाठीयता" के नाम से पुकारा जाता है। अंतरपाठीयता प्रतीकों के साथ केवल साहित्यिक घटनाओं, अर्थात् बाइबल के एक लेख के द्वारा दूसरे लेख के साथ व्यवहार करने के तरीकों, के रूप में व्यवहार करती है, न कि क्षितिज पर जो था उसे दर्शाने के लिए परमेश्वर द्वारा व्यवस्थित ऐतिहासिक वास्तविकताओं के रूप में प्रतीकों से व्यवहार करती है। बाइबल आधारित प्रतीकों को उन तरीकों तक सीमित कर दिया गया है, जिनमें बाद के बाइबल के लेखों ने विशेष धर्मवैज्ञानिक परिणामों के लिए पहले के बाइबल के अनुच्छेदों से व्यवहार किया।

हाल ही की इन प्रवृत्तियों के विपरीत, नए नियम के लेखकों ने प्रतीक विज्ञान का वर्णन "अंतरवास्तविकताओं" के रूप में किया। दूसरे शब्दों में, प्रतीक ऐसी ऐतिहासिक वास्तविकताएँ थी जिन्होंने वास्तव में अपने प्रतिरूपों के रूप में भविष्य की ऐतिहासिक वास्तविकताओं का पूर्व अनुमान लगाया। जैसा कि आपको याद होगा, रोमियों 5:14 में पौलुस ने आदम को "आने वाले की छाया" कहा था। पौलुस ने बस उत्पत्ति के लेख को ही नहीं, बल्कि ऐतिहासिक मसीह के पूर्वाभास के रूप में ऐतिहासिक आदम के बारे में लिखा। इसी रूप में, कुलुस्सियों 2:17 में पौलुस ने पुराने नियम की रस्म-संबंधी व्यवस्था के प्रतीक को "आने वाली बातों की छाया" के रूप में पहचाना। छाया का उसका रूपक यह सुझाव देता है कि पुराने नियम की रस्में उन वास्तविकताओं के फलस्वरूप उत्पन्न हुई थीं जिनमें मसीह ने उनकी छाया को अतीत की ऐतिहासिक वास्तविकताओं में परिवर्तित कर दिया था। नए नियम की गवाही का अनुसरण करते हुए, हमें यह पुष्टि करनी चाहिए कि परमेश्वर ने अपनी योजना में इतिहास को ऐसे व्यवस्थित किया कि पहले के कुछ व्यक्तिओं, संस्थाओं और घटनाओं ने बाद के कुछ व्यक्तियों, संस्थाओं, और घटनाओं का पूर्वानुमान या पूर्वाभास लगाया।

एक प्रश्न जो अक्सर प्रतीकों के एक पूर्वाभासी दृष्टिकोण की पुष्टि करने के द्वारा उठ खड़ा होता है, यह है : क्या पुराने नियम में रहने वाले लोगों ने ऐसे भविष्य को समझा था जिसकी ओर प्रतीकों ने

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

संकेत किया? क्या पुराने नियम के समयों के पात्र और लेखक अपने दिनों के प्रतीकों को देखने के द्वारा यह समझने के योग्य थे कि क्षितिज पर कौन से प्रतिरूप थे?

ऐसे भाव हैं जिनमें हमें इसका उत्तर "हाँ" में देना चाहिए। पहला, हम इस बात का इनकार नहीं कर सकते कि परमेश्वर ने समय समय पर लोगों को सटीक, विशेष प्रकाशन दिए जिन्होंने उन्हें इस तरह के पूर्वज्ञान को प्राप्त करने योग्य बनाया। उदाहरण के लिए, शायद पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता और अन्य अगुवे कुछ सीमा तक यह देखने में सक्षम थे कि कैसे प्रतीकों ने भविष्य के प्रतिरूपों का पूर्वानुमान लगाया।

दूसरा, कभी-कभी प्रतीकों के समय में रहने वाले लोग साधारण माध्यमों का प्रयोग करने के द्वारा भविष्य के प्रतिरूपों का अनुमान लगा सके। बहुत बार, पुराने नियम के प्रतीक उन धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं के साथ संबंधित थे जिनके भविष्य के विकास को परमेश्वर ने पहले से ही प्रकट कर दिया था। कहने का अर्थ यह है कि परमेश्वर ने उन रूपों का संकेत दे दिया था जिनमें कुछ धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ एक बड़े लक्ष्य की ओर आगे बढ़ेगी। जहाँ तक आरंभिक प्रतीक इन पूर्वदर्शित भावी वास्तविकताओं से जुड़े हुए थे, उन्होंने संकेत दिया कि किस तरह के भावी प्रतिरूपों की अपेक्षा की जा सकती थी।

उदाहरण के लिए, जैसा कि हमने इस पूरी श्रृंखला में कहा है, उत्पत्ति 1:28 में परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उस समय पृथ्वी का परम गंतव्य दिखा दिया था जब उसने उन्हें फलने-फूलने और पृथ्वी को वश में कर लेने के द्वारा अदन की वाटिका के स्वर्गलोक को संपूर्ण पृथ्वी तक पहुँचाने का आदेश दिया था। आरंभ से ही, परमेश्वर ने यह प्रकट कर दिया था कि उसने अपने स्वरूप को इसलिए नियुक्त किया है कि वह पूरे संसार को अदन के समान एक अद्‌भुत, पवित्र स्थान में परिवर्तित कर दे। आदम और हव्वा समझ गए थे कि अदन की वाटिका का अजूबा अपने आप में एक प्रतीक, अर्थात् उस बात का पूर्वानुमान था जो एक दिन पूरे संसार के लिए सत्य प्रमाणित होगा।

उत्पत्ति 15:18 में परमेश्वर ने अब्राहम की प्रतिज्ञा की भूमि की नदियों की सीमाओं को ऐसे पहचाना कि वे अदन की भूमि की नदियों के साथ जुड़ीं। इसलिए, जब अब्राहम अपनी प्रतिज्ञा की भूमि में चला फिरा, तो वह समझ गया कि उसकी भूमि अपने आप में कोई अंतिम बिंदु नहीं, बल्कि आरंभिक बिंदु थी जहाँ से उसके वंशज परमेश्वर की आशीषों को पूरी पृथ्वी पर फैलाएँगे। इसी कारण पौलुस ने रोमियों 4:13 में यह निष्कर्ष निकाला :

> **अब्राहम या उसके वंशजों को यह वचन कि वे संसार के उत्तराधिकारी होंगे, व्यवस्था से नहीं मिला था। (रोमियों 4:13)**

अब्राहम से प्रतिज्ञा की गई भूमि इस्राएल द्वारा परमेश्वर की आशीषों को पृथ्वी की छोर तक पहुँचाने का आरंभिक बिंदु थी। इस भाव में, लगभग अदन की वाटिका के समान, अब्राहम के वंशजों को दी गई प्रतिज्ञा की भूमि भी ऐसा प्रतीक थी जिसने यह पूर्वानुमान लगाया कि एक दिन पूरा संसार कैसा होगा।

इसके अतिरिक्त, उत्पत्ति 15:18 में उल्लिखित प्रतिज्ञा की भूमि की सीमाएँ वही सीमाएँ थीं जहाँ तक दाऊद का राज्य पीढ़ियों के बाद फ़ैल गया था। दाऊद ने उस संपूर्ण भूमि पर अधिकार कर लिया था जिसकी प्रतिज्ञा अब्राहम से की गई थी। वहाँ से, दाऊद के विश्वासयोग्य वंशजों ने अपनी दृष्टि को अन्य राष्ट्रों तक परमेश्वर की आशीषों को पहुँचाने पर लगाया। अतः, इस भाव में, पृथ्वी के इस क्षेत्र पर दाऊद के सिंहासन की स्थापना ने भी उस बात का पूर्वानुमान लगाया कि पूरे संसार के साथ एक दिन क्या होगा। सुनिए किस तरह से भजन संहिता 72:11, 17 दाऊद के भावी पुत्र के शासन का पूर्वानुमान लगाता है :

> सब राजा उसको दण्डवत् करेंगे, जाति जाति के लोग उसके अधीन हो जाएँगे . . .
> लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे, सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी।
> **(भजन संहिता 72:11, 17)**

अतः हम देखते हैं कि जैसे आदम और हव्वा को अपनी सीमाएँ अदन की वाटिका से पृथ्वी की अंतिम छोर तक पहुँचानी थीं, जैसे अब्राहम को प्रतिज्ञा की भूमि इसलिए दी गई थी कि वह परमेश्वर की आशीषों को पृथ्वी की अंतिम छोर तक पहुँचाए, वैसे ही दाऊद के घराने ने प्रतिज्ञा की भूमि पर इसलिए अधिकार प्राप्त किया कि वह परमेश्वर के राज्य और आशीषों का विस्तार पृथ्वी की अंतिम छोर तक कर दे।

प्रत्येक चरण पर, परमेश्वर ने जिस कार्य को पूरा किया उसने उसका पूर्वानुमान लगाया जो भविष्य में आने वाला था। कुछ सीमा तक उसके लोग उस प्रतीक-संबंधी महत्व का पूर्वानुमान लगा सके जिसका वे अपने समय में अनुभव कर रहे थे और इसका भी कि कैसे इसने भविष्य में एक बड़े प्रतिरूप की ओर संकेत किया। अन्य कई विषयों में, पुराने नियम के ऐसे लोग जो परमेश्वर के उद्देश्यों को समझ चुके थे, वे यह देख सके कि कैसे कुछ व्यक्ति, संस्थाएँ और घटनाएँ ऐसे प्रतीक थे जिन्होंने आने वाली वस्तुओं का पूर्वाभास कराया। उनकी समझ निश्चित रूप से सीमित थी, परंतु वे उन कई पहलूओं को समझ सके कि प्रतीकों ने उनके दिनों में भविष्य का पूर्वानुमान कैसे लगाया।

अब यह जितना भी सत्य क्यों न हो, फिर भी यह महसूस करना भी महत्वपूर्ण है कि अन्य कई विषयों में प्रतीकों और प्रतिरूपों को समझना पूर्वानुमान का नहीं बल्कि चिंतन एक बहुत बड़ा विषय है। यह पहचानने में कि कैसे अधिकांश प्रतीक अपने प्रतिरूपों में विकसित होंगे, आरंभिक व्यक्तियों, संस्थाओं और घटनाओं पर बाद के समय के दृष्टिकोण से चिंतन करना शामिल होता है।

इस समरूपता पर विचार करें। मान लें कि आपके हाथ में बाँजफल का एक बीज है और आप यह जानना चाहते हैं कि यह एक परिपक्व वृक्ष के रूप में कैसा दिखाई देगा। एक पूरी तरह से विकसित बाँज वृक्ष बाँजफल के बीज से बिल्कुल भिन्न दिखाई देगा। इसलिए, भविष्य के बारे में पहले से बताने की अलौलिक योग्यता के अतिरिक्त, यह जानना सरल नहीं है कि आपके हाथ में रखा हुआ बाँजफल का बीज एक परिपक्व वृक्ष के रूप में कैसा दिखाई देगा।

कई रूपों में, ऐसी ही परिस्थिति का सामना मनुष्यों ने पुराने नियम में किया था। प्रतीक अक्सर अपने प्रतिरूपों से इतने अधिक भिन्न दिखाई देते हैं कि उनके विकासक्रम का पूर्वानुमान लगाना लगभग असंभव हो जाता है। उदाहरण के लिए, यद्यपि पतरस ने नूह के जलप्रलय को मसीही बपतिस्मे के एक प्रतीक के रूप में पहचाना, परंतु नूह के दिनों में किसने कल्पना की होगी कि उस समय के विश्वव्यापी जलप्रलय ने मसीह में लोगों के बपतिस्मे का पूर्वाभास कराया। मूसा के दिनों में रहने वाले एक सामान्य इस्राएली के लिए यह जानना लगभग असंभव सा रहा होगा कि मूसा के पीतल के साँप ने मसीह के क्रूसीकरण का पूर्वाभास कराया। उनके लिए प्रतिरूप अपने प्रतीकों से इतने अधिक भिन्न लगते हैं कि अलौकिक प्रकाशनों के बिना उनके विषय में पहले से बताना असंभव है।

आइए हम अपनी समरूपता की ओर वापस मुड़ें तथा एक और कदम आगे बढ़ें। मान लें कि हम अपने हाथ में रखे बाँजफल के बीज के एक थोड़े से हिस्से को काट देते हैं और उसका एक संपूर्ण डी. एन. ए. विश्लेषण करते हैं। ऐसा करने के द्वारा हम उस बाँजफल के बीज की मुख्य विशेषताओं के बारे में और अधिक सीख जाते हैं। परंतु फिर भी, डी. एन. ए. उस बीज से विकसित हुए परिपक्व वृक्ष की प्रत्येक विशेषता को निर्धारित नहीं करता है। हम इस बात के प्रति निश्चित हो सकते हैं कि एक बाँजफल का बीज एक बाँज वृक्ष के रूप में ही विकसित होगा, न कि सेब या नाशपाती के वृक्ष में। परंतु हम उसकी कई सटीक जानकारियों, जैसे उसकी उँचाई, शाखाओं की संख्या, या उसकी जड़ों के आकार का पता नहीं लगा सकते। ये विशेषताएँ बाहरी प्रभावों, जैसे वातावरण, जलापूर्ति, पोषक-तत्व, प्रकाश, और बीमारी आदि से प्रभावित होती हैं। ये पूरी तरह से आनुवांशिकी नियमों से निर्धारित नहीं होते।

लगभग इसी तरह से, हो सकता है कि हम उन विशेष व्यक्तियों, संस्थाओं और घटनाओं से जुड़े आनुवांशिकी नियमों या धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं को समझ सकें जो बाइबल के इतिहास में प्रतीकों के रूप में कार्य करते हैं। यह ज्ञान हमें शायद बाद के विकासक्रम के बारे में कुछ अपेक्षाओं को प्रदान करे,

परंतु एक प्रतीक और उसके प्रतिरूप के बीच के विकासक्रमों को इन माध्यमों के द्वारा पहले से ही पूर्णतः बताया नहीं जा सकता। परमेश्वर से प्राप्त नए प्रकाशन अक्सर इतिहास को अनपेक्षित दिशाओं में ले जाते हैं। प्रतीक की धर्मवैज्ञानिक विशेषता की पूरी समझ प्राप्त होने के बावजूद भी हम सदैव इसके प्रतिरूप के विवरण को प्रकट नहीं कर सकते।

पहले के माध्यम से बाद वाले को प्रकट करने के द्वारा प्रतीकों और प्रतिरूपों को समझने का प्रयास करने की अपेक्षा, हमें चिंतन की प्रक्रिया पर निर्भर होना चाहिए। बाइबल के लेखकों के समान हमें अपनी ऐतिहासिक परिस्थिति का लाभ उठाना चाहिए और उन तरीकों पर चिंतन करना चाहिए जिनमें पहले के व्यक्ति, संस्थाएँ और घटनाएँ वास्तव में बाद के प्रतिरूपों में विकसित हुए।

अपनी समरूपता की ओर फिर से वापस मुड़ें, यदि हमारे पास बाँजफल के मुट्ठीभर बीज हैं और यदि हम उन्हें बाँजफल के अन्य बीजों के साथ बो देते हैं, तो कुछ वर्षों के बाद हम जंगल के प्रत्येक वृक्ष के डी. एन. ए. विश्लेषण की तुलना बाँजफल के प्रत्येक बीज के मूल डी. एन. ए. विश्लेषण से कर सकेंगे। इस दृष्टिकोण से हम यह पहचान सकेंगे कि कौनसा वृक्ष कौनसे बीज से विकसित हुआ है। लगभग इसी तरह से, बाइबल के इतिहास की बाद की अवधियों की धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं को जानने के दृष्टिकोण से हम उनकी धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं की तुलना बाद के व्यक्तियों, संस्थाओं और घटनाओं से संबंधित धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं के साथ करने के द्वारा प्रतीकों को पहचान सकते हैं।

एक मसीही के रूप में, पौलुस मसीह की आज्ञाकारिता से संबंधित धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं को समझ गया था और वह आदम की अवज्ञाकारिता से संबंधित समान धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओ की तुलना को भी देख सका था। इस आधार पर, उसने आदम को मसीह के एक प्रतीक के रूप में संबोधित किया। पतरस मसीही बपतिस्मे के जल से संबंधित धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं को समझ गया था और उसने नूह के जलप्रलय के जल से संबंधित धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं के परस्पर संबंध को दर्शाया। यीशु अपने क्रूसीकरण के धर्मवैज्ञानिक महत्व को समझ गया था, और उसने उसे मूसा के समय के पीतल के साँप के समान महत्व के साथ रखा। अतः यद्यपि प्रतीकों ने सचमुच अपने प्रतिरूपों का पूर्वानुमान लगाया, परंतु सामान्यतः हम इन पूर्वानुमानों को तभी पहचान सकते हैं जब उनके प्रतिरूप इतिहास में प्रकट हो जाते हैं।

जब हम चिंतन की इस प्रक्रिया को एक बार समझ लेते हैं, तो हम देख सकते हैं कि प्रतीकों को पहचानना पुराने नियम के ऐतिहासिक विकास के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण भाग है। इस बात के प्रति निश्चित रहें कि जब पवित्रशास्त्र प्रतीकों को पहचानता है, तो वे निर्देशात्मक होते हैं और हमें उनका खंडन नहीं करना चाहिए। परंतु पवित्रशास्त्र प्रत्यक्ष रूप से व्यापक ऐतिहासिक धर्मवैज्ञानिक विकास को नहीं खोजता है। जब बाइबल के धर्मविज्ञानी पुराने नियम के व्यापक धर्मविज्ञान की खोज करते हैं, तो उन्हें बाद के प्रकाशन के व्यक्तियों, संस्थाओं और घटनाओं के धर्मवैज्ञानिक महत्व को अवश्य सीखना चाहिए, और उसके बाद प्रकाशन की पहले की अवधियों में अपने पूर्वानुमानों को पहचानना चाहिए। इस तरह से, वे देख सकते हैं कि पुराने नियम का धर्मविज्ञान समय के साथ-साथ कैसे विकसित हुआ।

उपसंहार

इस अध्याय में, हमने पुराने नियम के ऐतिहासिक विकास की जाँच की है। हमने पुराने नियम के धर्मविज्ञान के प्रति ऐतिहासिक या विकासवादी दृष्टिकोणों के मूल दिशा-निर्धारण को प्राप्त किया है। हमने देखा कि कैसे पुराने नियम के धर्मविज्ञान ने ऐतिहासिक युगों या चरणों में प्रगति की। और हमने पुराने नियम के विशिष्ट विषयों के विकासक्रम का अध्ययन भी किया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पुराने निमय के ऐतिहासिक विकास के बारे में और भी बहुत सी बातें कही जा सकती हैं। परंतु इस अध्याय में हमने जो कुछ प्रस्तुत किया है, उसे समझ लेना हमें और अधिक जाँच करने की मजबूत नींव प्रदान करेगा कि किन रूपों में धर्मविज्ञान उत्पत्ति के आरंभिक दिनों से पुराने नियम के अंतिम दिनों तक विकसित हुआ।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।